वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 138 | बुधवार 11 सितम्बर 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

दक्षिण कोरिया यात्रा के दूसरे दिन मुख्यमंत्री ने सियोल टेक्निकल हाई स्कूल का दौरा किया

सैमसंग हेल्थकेयर ने एआई-आधारित नए स्वास्थ्य सेवा उपकरण उपलब्ध कराने के लिए राजस्थान के चिकित्सा और स्वास्थ्य विभाग के साथ सहयोग करने में रुचि दिखायी

दक्षिण कोरियाई कंपनियों ने राजस्थान में खाद्य प्रसंस्करण, स्वास्थ्य सेवा, स्टोन्स, माइनिंग, एनर्जी स्टोरेज, कार्बन फाइबर उत्पादन जैसे क्षेत्रों में शामिल होने में रुचि दिखाई। राजस्थान से स्टोन्स का निर्यात बढ़ाने के लिए कोरियन स्टोन एसोसिएशन के साथ हुई चर्चा

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल की यात्रा के दूसरे दिन मंगलवार को कई दक्षिण कोरियाई कंपनियों ने प्रदेश में अवसरों की तलाश करने और राज्य में अपने व्यवसाय का विस्तार करने में अपनी रुचि दिखायी है। इसमें सैमसंग हेल्थकेयर, एलएक्स इंटरनेशनल, ओरियन कॉरपोरेशन, ह्योसंग कॉरपोरेशन के साथ-साथ कोरियन स्टोन एसोसिएशन सहित कई अन्य दक्षिण कोरियाई कंपनियां शामिल हैं। प्रतिनिधिमंडल के संग चर्चा के दौरान, सैमसंग हेल्थकेयर ने राजस्थान के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के साथ मिलकर अक-आधारित नए हेल्थकेयर डिवाइसेज उपलब्ध कराने में अपनी रुचि दिखायी। वहीं, ओरियन कॉरपोरेशन ने अपने भिवाड़ी मैन्यूफैक्चरिंग प्लांट की चर्चा करते हुए राजस्थान के लिए अपनी विस्तार योजनाओं पर चर्चा की। एक अन्य दक्षिण कोरियाई फर्म एलएक्स इंटरनेशनल ने राज्य के माइनिंग

कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्णः मुख्यमंत्री शर्मा

इस अवसर पर बोलते हुए, मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने कहा, ''युवाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है। कौशल और व्यावसायिक प्रशिक्षण के व्यावहारिक कार्यान्वयन से प्राप्त ज्ञान युवाओं को सैद्धांतिक समझ के अलावा गतिशील और व्यावहारिक बनाता है। मैं इस प्रतिष्ठित संस्थान को राजस्थान आने और राज्य में एक संस्थान स्थापित करने के लिए आमंत्रित करता हूं।''

सेक्टर में काम करने की इच्छा जताई, खास कर लाइमस्टोन (स्टील ग्रेड), सिलिका, जिप्सम, लिग्नाइट, रेयर अर्थ मिनरल्स और अक्षय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में। एक अन्य प्रमुख दक्षिण कोरियाई फर्म ह्योसंग कॉरपोरेशन भारत में स्थानीय स्तर पर कार्बन फाइबर उत्पादन करने पर विचार कर रही है। इसके अलावा, राजस्थान सरकार के प्रतिनिधिमंडल ने कोरियन स्टोन एसोसिएशन के प्रतिनिधियों के साथ एक राइंडटेबल डिस्कशन में भी आज भाग लिया, जिसमें तकनीकी सहयोग, राजस्थान में उत्पादित स्टोन्स की खरीद/वितरण और प्रदेश से निर्यात बढ़ाने पर चर्चा की गई। कोरियन स्टोन एसोसिएशन और सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ स्टोन्स, जो राजस्थान सरकार का उपक्रम है, के बीच सहयोग बढ़ाने की भी संभावनाओं पर भी चर्चा की गयी। कोरिया स्टोन एसोसिएशन का एक प्रतिनिधिमंडल अक्टूबर में राजस्थान का दौरा करेगा। इस चर्चा के दौरान राज्य सरकार के प्रतिनिधिमंडल ने उन्हें फरवरी 2026 में जयपुर में आयोजित होने वाले इंडिया स्टोन मार्ट 2026 में भी आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल ने सियोल तकनीकी हाई स्कूल का भी दौरा किया और राजस्थान के युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए दक्षिण कोरिया और राजस्थान स्किल एंड लाइवलीहुड्स डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के बीच आपसी सहयोग पर चर्चा की। इस दौरान माननीय मुख्यमंत्री शर्मा ने छात्रों के बीच नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाली उल्लेखनीय पहलों, स्कूल के एडवांस्ड टेक्निकल सेंटर को भी देखा, छात्रों के साथ बातचीत की और कक्षाओं में सिखाई जा रही अत्यधिक उन्नत अक तकनीक का अनुभव किया। एक दिन पहले ही सियोल इन्वेस्टर्स मीट में निवेशकों को संबोधित करते हुए शर्मा ने कहा था कि उनकी सरकार राज्य में शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण में गुणात्मक सुधार पर बहुत जोर दे रही है। इन बैठकों के साथ, राज्य सरकार के प्रतिनिधिमंडल ने अपना दक्षिण कोरिया दौरा पूरा कर लिया है और अब 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 की तैयारियों के मद्देनजर यह प्रतिनिधिमंडल अब जापान की यात्रा करेगा।

गुरू वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन संपन्न

उदयपुर. शाबाश इंडिया

भारत विकास परिषद उदय शाखा उदयपुर के मीडिया प्रभारी सुनील गांग ने बताया कि जयदीप पब्लिक स्कूल,जयदीप अपर प्राइमरी स्कूल,जयदीप सीनियर सेकेंडरी स्कूल मॉडर्न कॉम्प्लेक्स उदयपुर में गुरू वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन भारत विकास परिषद उदय शाखा के द्वारा किया गया। इसमें श्रेष्ठ शिक्षिका के रूप में मंजू कुमावत, कल्पना शर्मा, पूजा पंवार को एवम दीक्षा कुंवर, गेमित परिहार, प्रेरणा कुंवर, अमन यादव,शिव राज भट्ट, लाजवंती गमेती को श्रेष्ठ स्टूडेंट्स के रूप में सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में डायरेक्टर डॉ.देवेंद्र कुमावत एवम प्रबंधक निहारिका ने संचालन का दायित्व निभाया। इस कार्यक्रम में शाखा की तरफ से डॉ.डी.के. गुप्ता, डॉ.प्रभा रानी गुप्ता, महावीर प्रसाद जैन, मीना बागरेचा ने सहभागिता निभाई।

बर्ड फ्रीडम डे का 11वां स्थापना दिवस मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

बर्ड फ्रीडम डे का 11 वा स्थापना दिवस होटल मैरियट में मनाया गया । आयोजक विपिन कुमार जैन और रुचिका जैन ने बताया कि मूक परिंदो की पिंजरों से आजादी की आवाज हेतु वर्ष 2014 से सितंबर माह के दूसरे रविवार को शुरू हुए बर्ड फ्रीडम डे अभियान के इस वर्ष 11 वर्ष पूर्ण हो रहे है ..आज होटल मैरियट में एक शाम परिंदों के नाम कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। परिंदो की पिंजरों से आजादी की आवाज को जन जन तक पहुंचाने हेतु इस वर्ष होटल जयपुर मैरियट में रविवार दिनांक 08.09.2024 को एक शाम परिंदो के नाम भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में महाभारत के अर्जुन फि रोज खान मौजूद रहे। फिरोज खान ने कहा कि मुझे इस कार्यक्रम में शामिल होकर बहुत गर्व का अनुभव हो रहा है ।इस मौके पर आयोजित कवि सम्मेलन में कवियों को सुनने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि 11 साल पहले शुरू हुआ यह अभियान आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंच चुका है। फिरोज खान ने इस मौके पर अपने फि ल्मी जीवन पर चर्चा की। रुचिका जैन ने बताया कि कैम्पेन के 11 साल पूरे होने के उपलक्ष्य मे 11 कवियों ने सम्मिलित रूप से मिलकर परिंदो की पिंजरों से आजादी की आवाज को बुलंद किया।

कवि किशोर पारीक ने सुनाया कि -

सुबह-सुबह पंछी घर आकर,श्री राधे।
शायद कहते हैं कुछ गाकर, श्री राधे।।
हम भी दाना-पानी आंगन में रखते ।
इनके संग थोडा मुस्काकर,श्री राधे।।

वही वरुण चतुर्वेदी ने दिल को छूते दो मुक्तक सुनाकर खूब वाह वाही लूटी -

प्यासे पंछी भटक रहे हैं मांग रहे पीने को जल ।

कवि राजेश खण्डेलवाल 'रजुआ' ने कविता सुनाई तो उपस्थित लोगों भाव विभोर हो गए -

उजाड़ो मत यूं पेड़ो को, चिता मेरी जलाने को,

कवि सम्मेलन में कवि किशोर पारीक, वरुण चतुर्वेदी ,विद्या भगवान सहाय पारिक ,युवा कवि सतपाल सोनी ,राजेश खंडेलवाल राजुआ
वेद दाधीच , बालमुकुंद पुरोहित ,अमित आजाद,
सत्य प्रकाश उपाध्याय ,विशाल गुप्ता
डॉ सुशीला शील ने कवि सम्मेलन में कविताओं का पठन किया ।

गौरतलब है की परिंदो की पिंजरों से आजादी की आवाज बर्ड फ्रीडम डे अब विश्व स्तर पर भी मनाया जा रहा है और गत वर्ष अमेरिका के शहर शिकागो से इसकी शुरूआत विश्व स्तर पर हो चुकी है .. आज आयोजित कार्यक्रम में बर्ड फ्रीडम डे विषय पर विश्व की सबसे बड़ी चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन भी होटल जयपुर मैरियट में किया गया इस वर्ष कार्यक्रम में परिंदो की पिंजरों से आजादी कार्यक्रम में महापौर सौम्या गुर्जर , भाजपा नेता श्रवण बगड़ी , एडवोकेट ललित शर्मा, सहयोग स्कूल के डायरेक्टर ओम प्रकाश , अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे ।

चौमूं में उत्तम आर्जव धर्म की हुई पूजा

चौमूं. शाबाश इंडिया। शहर में चंद्रप्रभु शांतिनाथ पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर जी में जैन समाज द्वारा 10 लक्षण महापर्व के तृतीय दिवस पर प्रातः कालीन अभिषेक शांति धारा एवं आजृव धर्म की पूजन की गई। जैन समाज प्रवक्ता पंकज बडजात्या ने बताया कि आज भगवान के प्रथम अभिषेक एवं शांति धारा करने का सौभाग्य नरेश कुमार नितेश कुमार नवीन कुमार पहाड़िया को प्राप्त हुआ। आजृव धर्म बताता है कि कथनी और करनी में भेद करने वाला न स्वयं तिर पाता है बल्कि अपने साथ चलने वालों को भी डूबने के कगार पर ला देता है इसीलिए कपटी की मित्रता से सदा दूर रहो आजृव धर्म अपना लो तभी अपना कल्याण कर सकते हो क्योंकि छल को छल हि खत्म कर सकता है इसीलिए अच्छी संगत में रहोगे तो अच्छे ही गुण आएंगे मन में कुछ वचन में कुछ प्रकट में कुछ प्रवृत्ति हो मायाचारी है इस माया कषाय को जीतकर मन वचन और काय की क्रिया में एक रूपता लाना उत्तम आजृव धर्म है संयोजक नितेश पहाड़िया आयोजक हिरालाल सुनिल जैन के सानिध्य में सायकाल महा आरती णमोकार भजन सांस्कृतिक कार्यक्रम जैन तंबोला हाऊजी का कार्यक्रम संपन्न हुए सभी विजेताओं को नरेश कुमार नितेश कुमार नवीन कुमार पहाड़िया द्वारा पुरस्कार दिया गया। इन सभी कार्यक्रमों के दौरान जैन समाज के पूर्व उपाध्यक्ष निहालचंद जैन सुरेंद्र काला पारस कासलीवाल शुभम चौधरी मुकेश चौधरी दिनेश छाबड़ा महामंत्री राजेंद्र पाटनी चंदा देवी सुनीता चौधरी प्रभादेवी शशि देवी इत्यादि श्रावक-श्राविकाएं मौजूद थी।

दसलक्षण पर्व पर रूठियाई में जैन समाज द्वारा विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन

रूठियाई. शाबाश इंडिया

तप त्याग एवं आराधना के पर्व दस लक्षण महापर्व जिसे पर्युषण पर्व भी कहा जाता है। इन दस दिनों में जैन धर्मावलम्बियों द्वारा पंच परमेष्ठियों की विशेष भक्ति करते हुए व्रत उपवास भी किए जाते हैं। दस दिनों तक चलने वाले इस धार्मिक पर्व की शुरूआत विगत 8 सितंबर को हो चुकी हैं एवं यह पर्व 17 सितंबर तक जारी रहेगा। 18 सितंबर को क्षमावाणी महोत्सव मनाया जाएगा। जैन मिलन अध्यक्ष अमित जैन सैंकी ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रतिदिन नगर के नारौनी स्थित 1008 आदिनाथ जैन मंदिर एवं 1008 मुनिसुब्रतनाथ मंगलोदय तीर्थ पर प्रातः 7 बजे से अभिषेक शांति धारा 7:30 बजे से पूजन विधान एवं अन्य धार्मिक क्रियाएं संपन्न की जा रही हैं। रात्रि में महाआरती 9 बजे से तत्वार्थ सूत्र का वाचन किया जा रहा है। सांगानेर से आए विद्वान अंशुल भैया एवम अमित भैया द्वारा मंगल प्रवचनों के माध्यम से धार्मिक सदोपदेश दिए जा रहे हैं। रात्रि में विभिन्न समितियों एवं सेवा दलों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

जैन मंदिर महल योजना में कलयुग की सांझ : नाटक का हुआ मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया

धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की श्रृंखला में महल योजना स्थित जैन मंदिर में ''कलयुग की सांझ'' नाटिका के माध्यम से वृद्धावस्था की समस्याओं और वृद्ध आश्रमों की दयनीय स्थिति को मार्मिकता से प्रस्तुत किया। समिति समन्वयक अभिषेक सांघी ने बताया कि अंजू रूपेश जैन के निर्देशन में मंचित लघु नाटिका ने वर्तमान परिपेक्ष में जीवन की सच्चाइयों से भी रूबरू कराया। सभी कलाकारों ने उत्कृष्ट अभिनय, गहन संवाद और भावभीनी प्रस्तुति से वृद्धावस्था की पीड़ा और उपेक्षा के प्रति समाज को जागरूक करने का एक सशक्त प्रयास किया। नाटिका के हर दृश्य ने यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि हमारे समाज में बुजुर्गों का सम्मान और देखभाल कितना महत्वपूर्ण है। इस अत्यंत संवेदनशील और सार्थक नाटिका के प्रभाव से भावविभोर होते हुए बच्चों के द्वारा अपने माता-पिता, दादा-दादी के पाद प्रक्षालन भी किए गए। इससे पूर्व अर्ह टीम द्वारा उत्तम मार्दव धर्म की ज्ञानवर्धक विवेचना की गई।

वेद ज्ञान

दुखों का मूल केवल कर्मफल

मनुष्य दुख और सुख का अनुभव मन के माध्यम से करता है। मन का निर्माण भूतकाल की यादों और अनुभवों द्वारा होता है। अतीत की यादें कभी सुखद तो कभी आत्मग्लानि, अपराधबोध, हीनता, आक्रोश और कटुता जाग्रत करने वाली होती हैं। मनुष्य वर्तमान के मोह में असंतुष्टि, अज्ञान और अन्य कारणों के साथ अतीत की यादों द्वारा सबसे ज्यादा दुखी महसूस करता है। इन बुरी और हीन यादों का बोझ वह न चाहते हुए भी ढोता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि संसार में अभी तक कोई ऐसी औषधि नहीं बनी, जिसके सेवन से इन यादों को मिटाया जा सके। पुरानी यादों के द्वारा अपराध बोध से ग्रसित होकर मनुष्य का स्वभाव नकारात्मक हो जाता है और इसकी अति होने पर मानसिक बीमारियां-जैसे अवसाद आदि से ग्रसित होकर स्थाई रूप से दुख अनुभव करने लगता है। पुरानी यादें मनुष्य के स्वयं के कर्मों की ही प्रतिक्रिया हैं और कर्मफल से संसार में कोई भी प्राणी यहां तक कि ईश्वर भी नहीं बच सके हैं। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि हर जीव को कर्मफल भोगना ही पड़ता है। इस तथ्य की पुष्टि आज के समय में विज्ञान के तथ्यों द्वारा अमेरिका के एक मनोचिकित्सक ब्रायन ब्रास ने अपनी पुस्तक मैनी लाइफ मैनी मास्टर्स में की है। इससे स्पष्ट होता है कि दुखों का मूल केवल कर्मफल और अज्ञानता है। इससे बचने का उपाय भगवान ने गीता में बताया है कि मनुष्य को कर्म, अकर्म एवं विकर्म का भेद जानकर केवल वही कर्म करना चाहिए जो उसके स्वधर्म के अनुकूल हो और स्वधर्म के अनुसार किए कर्म का फल स्वतः भगवान को अर्पण हो जाता है। इस प्रकार कर्मफल से मुक्त होकर वह प्रतिक्रियास्वरूप सुख-दुख से भी मुक्त हो जाता है। विकर्म वह है, जो स्वधर्म एवं नैतिकता के विरुद्ध किया जाता है। इस कारण इसका कर्मफल मनुष्य को स्वयं भोगना पड़ता है। विकर्म के लिए उसे उसके मन और बुद्धि ही प्रेरित करते हैं। इसलिए संयम, सदाचार और महापुरुषों के आचरण का पालन करके मनुष्य विकर्म से बचकर दुखों से भी बच सकता है। आइए कर्मफल के सिद्धांत को समझकर विकर्म से बचकर सुख और आनंद की प्राप्ति करें। यही मर्म समझकर हम अपने जीवन को सही मायनों में सार्थक बना सकते हैं।

संपादकीय

''एक राज्य एक आरआरबी'' का मॉडल

देश में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) की स्थापना 1975 में एक कार्य समूह की अनुशंसाओं के बाद की गई थी। इसके पीछे विचार था क्षेत्रीय स्तर पर केंद्रित बैंकों की स्थापना करना जो स्थानीय मुद्दों से वाकिफ हों और ग्रामीण इलाकों में बैंकिंग सेवाओं का विस्तार किया जा सके आरआरबी का मालिकाना संयुक्त रूप से भारत सरकार, संबंधित राज्य सरकार और प्रायोजक वाणिज्यिक बैंक के पास होता है और ये उसमें क्रमशः 50 फीसदी, 15 फीसदी और 35 फीसदी के हिस्सेदार होते हैं। इन बैंकों का नियमन भारतीय रिजर्व बैंक करता है लेकिन उनकी निगरानी राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) करता है। जैसा कि इस समाचार पत्र में गत सप्ताह प्रकाशित हुआ, केंद्र सरकार आरआरबी के बीच समेकन की योजना पर काम कर रही है। संभव है कि ''एक राज्य एक आरआरबी'' का मॉडल सामने आए जिससे आरआरबी की तादाद 43 से कम होकर 30 रह जाएगी। इसका उद्देश्य यह है कि आरआरबी को अधिक सक्षम बनाया जाए और प्रायोजक बैंक के साथ प्रतिस्पर्धा समाप्त की जा सके। यह सही है कि आरआरबी की क्षमताओं में सुधार करने की आवश्यकता है, लेकिन इस बात की संभावना बहुत कम है कि वे अपने प्रायोजक बैंक या किसी अन्य बैंक को टक्कर दे पाएंगे क्योंकि उनका आकार और ध्यान सीमित क्षेत्र पर रहता है। उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक मार्च 2023 में 43 आरआरबी की समेकित बैलेंस शीट 7.7 लाख करोड़ रुपये थी। तुलना करें तो गत वित्त वर्ष के अंत में स्टेट बैंक की बैलेंस शीट ही करीब 62 लाख करोड़ रुपये की थी आरआरबी की 90 फीसदी शाखाएं ग्रामीण इलाकों में होने के बावजूद कृषि में इनकी भूमिका सीमित रही है। रिजर्व बैंक के आंकड़े दिखाते हैं कि कृषि क्षेत्र को दिए जाने वाले ऋण में आरआरबी की हिस्सेदारी केवल 11- 12 फीसदी है। करीब 80 फीसदी कृषि ऋण अधिसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा दिया जाता है। परिचालन की बात करें तो आरआरबी का समेकित लाभ सुधरा है लेकिन घाटे में चलने वाले बैंकों का कुल घाटा 9,800 करोड़ रुपये से अधिक हो चुका है। 2021-22 और 2022-23 में आरआरबी को 10,890 करोड़ रुपये की पुनर्पूंजीकरण सहायता प्रदान की गई। यह राशि सभी अंशधारकों द्वारा विगत 45 सालों में लगाई गई कुल पूंजी से अधिक थी। स्पष्ट है कि बीते वर्षों के साथ पूंजी की बेहतर उपलब्धता उन्हें अपने वास्तविक उद्देश्य को पाने में मदद करती। बहरहाल, इस पूंजीकरण के बावजूद नी आरआरबी मार्च 2023 के अंत में न्यूनतम पूंजी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सके। 2020-21 में इनकी संख्या 16 थी। इसके अलावा बीते वर्षों के दौरान हालात तेजी से बदले हैं और पूरी सेवाएं देने वाले वाणिज्यिक बैंक अब ग्रामीण इलाकों में भी बैंकिंग सेवाएं देने के मामले में बेहतर स्थिति में हैं। ऐसे में सरकार की समेकन की प्रक्रिया के दौरान इस बात पर भी विचार किया जाना चाहिए कि क्या घाटे में चल रहे आरआरबी बंद किए जा सकते हैं? **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

चेतावनी या सियासी भ्रम?

कोलकाता चिकित्सक बलात्कार और हत्याकांड पर उभरे जनाक्रोश को ममता बनर्जी विपक्षी दलों का उकसावा बता कर अपना बचाव करने की कोशिश करती रही हैं। केंद्र सरकार पर आरोप लगाती रही हैं कि वह पश्चिम बंगाल में अव्यवस्था फैलाने का प्रयास कर रही है। इसे लेकर उन्होंने खुद एक रैली भी निकाली थी। मगर अब उन्हें अपने ही लोगों के सवालों का जवाब देना भारी पड़ रहा है। तृणमूल कांग्रेस के राज्यसभा सांसद जवाहर सरकार ने अपनी सदस्यता से इस्तीफा देते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को पत्र लिखा है। उन्होंने लिखा है कि कोलकाता चिकित्सक मामले में राज्य सरकार ने काफी देर से और अपर्याप्त कदम उठाए। इससे उनका पार्टी और मुख्यमंत्री के कामकाज से मोहभंग हो गया है। मुख्यमंत्री राज्य सरकार के भ्रष्टाचार और नेताओं के एक वर्ग के बल प्रयोग की रणनीति से बिल्कुल बेपरवाह हैं। यह पहला मौका नहीं है, जब जवाहर सरकार ने पार्टी में चल रही गलत गतिविधियों पर आपत्ति दर्ज कराई। हालांकि एक पार्टी प्रवक्ता ने कहा है कि जवाहर सरकार के उठाए मुद्दों पर पार्टी ध्यान देगी और सकारात्मक कदम उठाएगी। मगर ममता बनर्जी इस पर कितनी गंभीरता दिखाएंगी, फिलहाल कहना मुश्किल है। कोलकाता चिकित्सक हत्या मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने भी कुछ तीखे सवाल किए थे। उनमें सबसे अहम सवाल है कि घटना के बाद कार्रवाई करने में देर क्यों की गई। हालांकि ममता बनर्जी कहती रहीं कि वे आंदोलनकारियों की भावनाओं की कद्र करती हैं। उन्होंने शुरू में ही सीबीआइ जांच पर सहमति दे दी थी। कुछ संबंधित कर्मचारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई भी की गई। सर्वोच्च न्यायालय ने माना है कि मामले की जांच सही दिशा में चल रही है। मगर जांचों में जिस तरह के तथ्य सामने आ रहे हैं, उससे राज्य सरकार की कार्यशैली पर गंभीर सवाल उठते हैं। उसमें गंभीर अनियमितताएं उजागर हुई हैं। इसके बावजूद अगर मुख्यमंत्री विरोध प्रदर्शनों में राजनीति देख रही हैं, तो इससे उनके मामले पर पर्दा डालने की कोशिश ही पता चलती है। घटना के इतने दिन बीत जाने के बाद और सर्वोच्च न्यायालय की दखल के बावजूद अगर वहां विरोध प्रदर्शन नहीं रुक रहे, चिकित्सक अपने काम पर नहीं लौटे हैं, तो उनकी नाराजगी स्वतःस्फूर्त है। वह अनेक अनियमितताओं और सरकार की गलत नीतियों या फैसलों, कार्यशैली से पैदा हुई है। उसे सियासी चश्मे से देखने से स्थितियां बदल नहीं जाएंगी। यह छिपी बात नहीं है कि ममता सरकार पर कई गंभीर अनियमितताओं के आरोप लगे। शिक्षा घोटाले में उनके मंत्री को जेल जाना पड़ा, कोयला खदान में अनियमितता के आरोप खुद उनके भतीजे पर हैं। फिर उनके पार्टी कार्यकर्ता किस तरह सरकारी योजनाओं का फायदा उठाते और लोगों को डरा-धमका कर अपने पक्ष में करने की कोशिश करते रहे हैं, इसके भी कई उदाहरण हैं। इन सबके चलते अगर पार्टी के एक वरिष्ठ सदस्य का मोहभंग हुआ है, तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि आम लोगों में किस तरह की प्रतिक्रिया उभरती होगी। इसलिए जवाहर सरकार का इस्तीफा और चिट्ठी ममता बनर्जी के लिए अपनी कार्यशैली के मूल्यांकन का अवसर है। अगर इसे भी वे सियासी चश्मे से देखने का प्रयास करेंगी, तो सुधार का मौका गंवा देंगी।

लायंस क्लब कोटा सेंट्रल का बोन डेंसिटी चेकअप कैंप

45 मरीजों ने पाया जांच व परामर्श लाभ

आजाद शेरवानी. शाबाश इंडिया

कोटा। लायंस क्लब कोटा सेंट्रल द्वारा हड्डियों का घनत्व जांच शिविर बरथुनिया नर्सिंग होम में लगाया गया। अध्यक्ष मधु ललित बाहेती एवम सेक्रेटरी राधा खुवाल ने बताया कि 40 वर्ष के ऊपर की आयु वाले मरीजों में जोड़ों के दर्द, बार बार फ्रैक्चर होना जेसे लक्षणों पर उनकी हड्डियों के घनत्व की मशीन द्वारा जांच करवाई गई। डॉ निधि बरथुनिया ने बताया कि 40 वर्ष से ऊपर के सभी महिला पुरुषो को प्रति 6 माह में यह जांच करवानी चाहिए, कैल्शियम और विटामिन बी 12 की कमी से जोड़ों में सूजन, दर्द, जरा सी चोट में फ्रेक्चर होना, शरीर का झुकना जेसे रोग हो जाते हैं इसके लिये दवा लेने के साथ साथ अपनी डाइट में सुधार से हड्डियों को बहुत हद तक सुरक्षित रख सकते हैं। फिटनेस एक्सपर्ट डॉ सुशीला बरथुनिया ने बताया कि रोजाना एक्सरसाइज करने और घूमने की आदत से हड्डियां लचीली बनी रहती है तो फ्रेक्चर का खतरा बहुत हद तक कम हो जाता है। अतः इसको अपनी दिनचर्या बनाओ। शिविर में रीजन चेयरमैन दिनेश खुवाल, ललित बाहेती, राजकुमार गुप्ता, रामकृष्ण बागला इत्यादि उपस्थित रहे। 2 बजे तक चले कैंप में 45 जनों ने जांच व परामर्श का लाभ लिया।

दशलक्षण महापर्व के तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म की हुई पूजा

शहर में सभी जैन मंदिरों में हुए विशेष धार्मिक आयोजन

सीकर. शाबाश इंडिया

शहर के समस्त जैन मंदिरों में दशलक्षण महापर्व के तीसरे दिन मंगलवार को उत्तम आर्जव धर्म की पूजा अर्चना की गई। सुबह भगवान का अभिषेक व शांतिधारा हुई । नित्य नियम पूजा और उसके बाद सोलह कारण पंचमेरू दशलक्षण और विधान में उत्तम आर्जव की पूजा की गई। जैन मंदिर में हो रहे पूजा अर्चना को लेकर जैन श्रद्धालुओं में उत्साह है, प्रातः समाज के सभी आयु वर्ग के लिए उत्साह के साथ आयोजन में सम्मिलित होते हैं। दीवान जी की नसियां में प्रतिदिन आयोजित धार्मिक आयोजन में ब्रह्मचारिणी ज्योति दीदी ने बताया कि उत्तम आर्जव धर्म हमें छल कपट से दूर रहकर जीवन जीने की कला सिखाता है। इस संसार में जो भी व्यक्ति किसी के साथ दवा करता है। उसे स्वयं के जीवन में भी दूसरे से धोखा खाना पड़ता है। ऐसे में यह धर्म हमें छल कपट ना करके सही काम करने की प्रेरणा देता है। देवीपुरा जैन मंदिर कमेटी के मंत्री पंकज दुधवा व उपमंत्री नरेश काला लालास ने बताया कि प्रातः काल प्रथम अभिषेक व शांतिधारा व सायंकाल महा आरती का सौभाग्य भागचंद नरेश कुमार विनय कुमार कालिका को प्राप्त हुआ।

जैन मंदिर महावीर नगर में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री महावीर युवा मंडल द्वारा फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें मंडल ने तीन ग्रुप रखें पहला 1-4 वर्ष ,5-10 वर्ष,10-15 वर्ष तक के बालक व बालिकाओ इसमें कुल 37 प्रतिभागियो भाग लिया। इसमें पहले ग्रुप में 1 स्थान पर पार्थ जैन 2 स्थान पर समृद्ध जैन 3 स्थान कुहान जैन द्वितीय ग्रुप में 1 स्थान पर्व जैन 2 स्थान अयांश गंगवाल 3 स्थान दिविग्या जैन तृतीय ग्रुप में 1 स्थान नैतिक जैन 2 स्थान सक्षम जैन 3 स्थान देवांश जैन रहे फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि राजेन्द्र श्रीमती राजमती पाण्डया और विजय श्रीमती नीलम अजमेरा रहे। इस प्रतियोगिता के संयोजक शुभम बाकलीवाल डाक्टर अमित जैन ऋषभ दिवान और रजत पहाड़ियां थे।

श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति मुनि संघ सेवा समिति द्वारा हुआ भव्य आयोजन

अजमेर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति मुनि संघ सेवा समिति के तत्वावधान में, सर्वोदय कॉलोनी इकाई द्वारा धार्मिक गेम का आयोजन सोनी जी की नसिया में किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष मधु पाटनी ने बताया कि दसलक्षण पर्व हर साल उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दौरान हम धार्मिक कार्यक्रम, नाटिका आदि का आयोजन करते हैं। उत्तम मर्दव धर्म के उपलक्ष्य में धार्मिक खेल के संयोजक श्रीमती यूवनिका और नीरू सोगानी रहे। कार्यक्रम की शुरूआत समिति के मंगलाचरण से हुई। रेनू पाटनी ने बताया कि भक्ति द्वारा मंगलाचरण बेबी नवधा गदिया द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती उर्मिला सोगानी, श्रीमती रूपल सहूला, श्रीमती अनीता और श्रीमती अमृता सोगानी ने कुशलतापूर्वक किया और सभी प्रतिभागियों को एक अनोखा अनुभव प्रदान किया। कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के खेल आयोजित किए गए, जिनमें 'संबंधित बोल', ''धार्मिक पहेलियां'', 'भजन की धुन', 'टंग ट्विस्ट चैलेंज', और 'पहचान कौन ?' जैसे विविध खेल शामिल थे। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में उपहारों की व्यवस्था श्री प्रमोद सोनी द्वारा की गई, जिनके समर्थन और सहयोग से यह आयोजन और भी विशेष और उत्साहपूर्ण बना। अंत मे, सर्वोदय इकाई अध्यक्ष मधु जैन मंत्री गुण माला गंगवालने सभी का आभार व्यक्त किया। सर्वोदय कालोनी इकाई की ओर से सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए, इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में योगदान देने वाले सभी लोगों को सराहा गया।

शिक्षक दिवस 2024 के उपलक्ष में प्रिंसिपल्स एंड टीचर्स अवार्ड के तेरहवें संस्करण का भव्य आयोजन हुआ

जयपुर. शाबाश इंडिया

थार सर्वोदय संस्थान, सिम्पली जयपुर और रघु सिन्हा माला माथुर चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में शिक्षकों के सम्मान में प्रिंसीपल्स एंड टीचर्स अवार्ड 2023 के तेरहवें संस्करण का आयोजन शनिवार 9 सितम्बर को सायं 5:00 बजे से रंगायन - जवाहर कला केंद्र में किया गया। इस वर्ग में डॉ जसबीर जैन, प्रोफेसर डॉ पवन सुराणा, डॉ दुर्गा प्रसाद अग्रवाल, श्रीमती रूप कौल, श्रीमती उदय मिर्धा और पंचशील जैन का लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर पर जम्मू-कश्मीर, लखनऊ, नई दिल्ली और राजस्थान के सभी जिलों जिसमे जयपुर, जोधपुर, पाली, जालोर , अजमेर , बाड़मेर , कोटा से शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी तथा निजी स्कूलों, विश्वविद्यालयों, और कोचिंग संस्थानों के चयनित शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर रघु सिन्हा माला माथुर चैरिटी ट्रस्ट द्वारा हर साल की तरह इस वर्ष भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना जीवन समर्पित करने वाले शिक्षकों को पुरस्कृत किया गया जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और समाज को नई दिशा देने का कार्य किया है। कार्यक्रम में विभिन्न प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों के प्राचार्यों और शिक्षकों को उनके अनुकरणीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया, जो न केवल विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं बल्कि समाज के उत्थान में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं।

दशलक्षण महापर्व में श्री महावीर दि. जैन मंदिर मुरलीपुरा में 5 वर्ष से लेकर 15 वर्ष तक के बच्चे कर रहे दस धर्म पर प्रवचन द्वारा जिन धर्म की प्रभावना

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन धर्म के सबसे बड़े पर्व दशलक्षण महापर्व 8 सितंबर से 17 सितम्बर, अनंत चतुर्दशी तक श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर मुरलीपुरा में अति उत्साह एवं भक्ति भाव से मनाये जा रहे हैं। मंदिर समिति के अध्यक्ष धर्मचंद बड़जात्या एवं महामंत्री नीरज जैन ने बताया कि दशलक्षण महापर्व जैन धर्म में सबसे बड़े पर्व हैं। श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर मुरलीपुरा में प्रतिदिन प्रातः 6:30 बजे से श्रीजी के प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारो होती हैं, इसमें समाज के 40-50 युवा अभिषेक करते हैं। तत्पश्चात पूजा के माध्यम से जिनेन्द्र देव की भक्ति आराधना की जताई है। इसी कड़ी में प्रतिदिन सायंकाल मंदिर में 7 बजे से महाआरती की जाती है, आरती के पश्चात नमोकार महामंत्र की एक माला का सामूहिक रूप से जाप होता है। जाप के पश्चात जयपुर की धरा पर प्रथम बार श्री महावीर पाठशाला मुरलीपुरा में पढ़ रहे बच्चों द्वारा प्रतिदिन 10 धर्म पर प्रवचन दिए जा तो है। जो कि अपने आप में बहुत अनोखा और अदभुत अनुभव है। प्रवचन के पश्चात पाठशाला के बच्चो द्वारा मंगलाचरण किया जाता है, तत्पश्चात प्रतिदिन धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तम क्षमा के प्रथम दिने भक्तामर के 48 काव्यों का रिद्धि सिद्धि मंत्रों के साथ पाठ किया गया था, उत्तम मार्दव के दिन कल श्री महावीर को जानो, रोचक प्रश्नोतरी का आयोजन किया गया था, आज उत्तम आर्जव धर्म के तृतीय दिवस पर सायंकाल मंदिर परिसर में जिन भजन संध्या का आयोजन किया जायेगा।

जैन श्रावक श्राविकाओं की भक्ति से महक उठे जिनालय

शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में हुआ प्रतिमाओं का परिमार्जन

कामां, डीग. शाबाश इंडिया। वर्तमान में जैन धर्म के सबसे बड़े पर्व दसलक्षण महापर्व चल रहे हैं जिससे जैन जिनालयों में श्रावक श्राविकाओं द्वारा प्रातः से ही दर्शन, अभिषेक ,शांतिधारा, पूजन भजन के कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं। जिससे सभी जैन मंदिरों में रौनक दिखाई दे रही है। जैन श्रावक श्राविकाओं के भक्ति भाव से ऐसा लगता है कि जिनालय भक्ति से महक उठे हैं। मन्दिर समिति के कोषाध्यक्ष प्रदीप जैन बड़जात्या ने बताया कि दसलक्षण पर्व के तीसरे दिवस भाद्र पद शुक्ल सप्तमी को उत्तम आर्जव धर्म की विशेष पूजा आराधना की गई। तो इस अवसर पर रिंकू भैया न कहा कि छल कपट व मायाचार से अर्जित धन से कुछ दिन का वैभव तो प्राप्त कर सकते हो किन्तु कर्मो की विराधना नही कर सकते। बेईमान व्यक्ति का परिवार, समाज, नगर में यथोचित यश गान,मान सम्मान भी नहीं होता है और उसका दंश उसे हर समय सालता रहता है।अतः नीति नियम के अनुसार मायाचार रहित जीवन व्यतीत करना ही उत्तम आर्जव है। मंदिर समिति के महामंत्री संजय जैन बड़जात्या ने बताया कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बुधवार को अष्टधातु की प्रतिमाओं का परिमार्जन किया गया। इस अवसर पर अजय जैन, इंदु जैन, अरिहंत, नीरज, विवेक, सचिन, नरेंद्र, राजेन्द्र, देवेंद्र,बिट्टू बड़जात्या, ज्ञानचंद, गौरव, श्रीपाल, पवन, अनिल, मुनेश, दौलत जैन सहित अन्य श्रावक गण उपस्थित रहे।

हार्दिक श्रद्धांजली

हमारे जेएसजी ग्लोरी ग्रुप के सचिव
श्री हेमंत जी बड़जात्या की माताजी

श्रीमती रंजना जी बड़जात्या

(धर्मपत्नी स्वर्गीय रमेश चंद जी बड़जात्या)

का स्वर्गवास आज दिनांक 10 सितंबर 2024 को सुबह हो गया है।
श्रीमती रंजना जी बड़जात्या धर्मपरायण, मुनीभक्त, सेवाभावी व्यक्तित्व की धनी महिला थी। भगवान जिनेन्द्र से प्रार्थना हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोक संतप्त परिवार को दुख सहन करने की शक्ति दे।
ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति

श्रद्धांवत

पियूष - मोनाली सोनी, नयन - मोनिका जैन, विनीत - संजोली जैन, श्वेता - नीरज अजमेरा, प्रकाश-अंजु जैन, अखिल-अनीता जैन, रमेश-पुष्पा जैन
एवम समस्त जे एस जी ग्लोरी परिवार

महिला मंडल वरुण पथ द्वारा भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। महिला मण्डल वरुण पथ,मानसरोवर अध्यक्ष, डॉ.सुशीला टोंग्या द्वारा अवगत कराया गया कि 09 सितम्बर को वरुण पथ मन्दिर प्रांगण में श्री सम्मेद शिखर जी की भाव वन्दना से तीर्थ क्षेत्र शिखर जी पहुंच गए, सांस्कृतिक मंत्री, श्वेता बाकलीवाल द्वारा धार्मिक ज्ञान एवं मधुर स्वरों के साथ गौरवान्वित किया गया।जिनके स्वरों के साथ गायन का सभी सदस्यों द्वारा आभार व्यक्त किया गया। प्रो. इन्द्र प्रभ जैन,प्रो.मृदुला जैन द्वारा दीप प्रज्वलित किया गया,मुख्य परामर्शक चन्द्र कांता छाबड़ा,कनकलता जैन, हीरामणि जैन एवम् महिला मण्डल समिति की सभी सदस्यों द्वारा बहुत अच्छा प्रदर्शन किया गया।मंडल सचिव, वीणा जैन द्वारा सदस्यो का स्वागत उद्धबोधन किया गया।

उपाध्याय वृषभानंदजी महाराज के सानिध्य में दश लक्षण महापर्व का उत्तम आर्जव धर्म मनाया गया

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर थड़ी मार्केट अग्रवाल फार्म मानसरोवर में आचार्य वसुनंदी जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य उपाध्याय वृषभानंदजी महाराज मुनि श्री सदानंद जी महाराज ससंघ के सानिध्य में दश लक्षण महापर्व बड़े ही हर्षोल्लाह एवं धूमधाम से मनाया जा रहा है समिति के अध्यक्ष पवन जैन नगीना वालों ने बताया की मुनि श्री ने तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म पर अपने प्रवचन में मैं कहा कि इंसान को किसी भी अवस्था में मायाचारी नहीं करनी चाहिए क्योंकि मायाचारी व्यक्ति को इस भव में तथा पर भव में कहीं भी सुख नहीं मिल सकता व्यक्ति को परिवार में समाज में कही भी मायाचारी नहीं करनी चाहिए जो जैसी स्थिति है उसे स्थिति को वैसे ही वर्णन करना चाहिए उससे वह मायाचारी के दोष से बच सकता है माया चार व्यक्ति को हमेशा नीच गति का बंध होता है।इस अवसर पर उपाध्याय श्री ने कई दृष्टांत के द्वारा मायाचार की विस्तृत व्याख्या की।समाज के सभी बंधु बड़े ही हर्ष उल्लास के साके साथ पुण्य अर्जन कर रहे हैं अवसर पर समिति के मंत्री अनिल बाकलीवाल संयोजक सुमत प्रकाश जी की युवा मंडल अध्यक्ष सिद्ध प्रकाश सेठी मंत्री मनीष जैन पदमपुरा अनिल बाकलीवाल पंकज लुहाड़िया नरेंद्र जैन आदि उपस्थित रहे।

भगवान श्री गणेश का महाभिषेक आज

सात दिवसीय श्रीगणेश महोत्सव का अभूतपूर्व आयोजन

विराटनगर. शाबाश इंडिया। मां वैष्णो सत्संग मंडल के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आयोजित सात दिवस गणेश महोत्सव के दौरान आज बुधवार को विद्वान पंडितो द्वारा विधि विधान से 1100 मोदक एवं 1100 दुर्वा के साथ महाभिषेक संपन्न कराया जाएगा। मंडल संयोजक नरेंद्र शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि मंडल द्वारा 7 सितंबर से 14 सितंबर तक आयोजित गणेश महोत्सव के दौरान प्रतिदिन सुबह एवं सांयकाल पूजार्चना,भजन, तथा महा आरती का कार्यक्रम निर्धारित है, जिसमें सैकड़ो भक्तजन एवं श्रद्धालु भाग लेते हैं।उन्होंने बताया कि गुरुवार 12 सितंबर को भव्य शोभा यात्रा के रूप में भगवान श्री गणेश प्रतिमा का नगर भ्रमण कराया जाएगा।तत्पश्चात आगामी 15 सितंबर को पांच दिवसीय गणेश विसर्जन यात्रा के दौरान अयोध्या, नेमीशरण, काशी विश्वनाथ, चित्रकूट, मथुरा एवं वृंदावन सहित अनेक तीर्थ स्थलों का दर्शन किया जाएगा, जिसमें 200 भक्तजनों का जत्था बस द्वारा रवाना होगा।

अखिल भारतीय खंडेलवाल वैश्य युवा जागृति संघ जयपुर द्वारा कार्यशाला का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। अखिल भारतीय खण्डेलवाल वैश्य युवा जागृति संघ जयपुर द्वारा रविवार 8 सितंबर 2024 को रेडिसन होटल खासा खोटी में कार्यकारिणी सदस्यों के लिए कार्यशाला - व्यवहारिक शिक्षा , वास्तविक परिणाम का आयोजन किया गया। कार्यशाला में स्वास्थ्य, वित्त, कानून इत्यादि के विशेषज्ञों द्वारा विषयों पर चर्चा की गई और उपस्थित सदस्यों के दैनिक जीवन में आने वाली परेशानियों का भी निवारण किया। कार्यशाला में कैंसर विशेषज्ञ डॉ.उमेश खण्डेलवाल, सी ए रवि मामोडिया, सी ए गिरीश डंगायच, मिसेज इंडिया 2018 ट्विंकल पाटोदिया, समन्वयक सी ए कुलदीप गुप्ता , एडवोकेट निधि खण्डेलवाल, आई विशेषज्ञ अभिनव महरवाल, पार्षद अक्षत खुंटेटा इत्यादि विषय विशेषज्ञों द्वारा अपने विचार व्यक्त किए गए।

भीतर के परमात्मा को साकार करने के लिए निश्छल भाव आवश्यक है

मुनि श्री विशल्यसागर जी

भीतर से ऋजुता को जन्म दे देना, सरलता को जन्म दे, निष्कपटता को जन्म दे लेना, भीतर से एकाग्रता को स्थायीपन को जन्म देने का नाम ही आर्जव धर्म है। लेकिन

ख्याल रखिएगा - सम्यक दर्शन के साथ जो सरलता, ऋजुता है, निष्कपटता, सीधापन है वही आर्जव धर्म है। इसलिए इसकी पूर्णता मात्र हीन कम नौ करोड़ मुनिराज ही करते हैं। मन - वचन - काय और दर्शन ज्ञान चारित्र में किसी की भी कमी हो तो परिणामों की निर्मलता नही हो पाती। स्वभाव से स्वभाव का परिचय नही होता। इसलिए आर्जव धर्म प्रगट नही हो पाता है और जीवन सर्प की चाल के समान टेढ़ा-मेढ़ा हो जाता है। बड़ी खतरनाक है ये माया और ये माया सभी के जीवन में है। इसलिए मनुष्य का जीवन भीतर से खोखला होता जा रहा है। यह माया ऊपर से बहुत अच्छी होती है, मीठी होती है, सरल होती है, सच्ची होती है, पर भीतर से आरी के समान कार्य करती है। यह बाहर बॉस सीधी होती है, भीतर उसकी जड़ सी टेढ़ी - मेढ़ी होती है। इसलिए उसके भीतर के भावों को समझना कठिन हो जाता है, ऐसे छली इंसान को बगुला भगत की उपमा से अंलकृत किया जाता है। जैसे बगुला नदी, सरोवर के किनारे एक टांग ऊपर करके आँख बंद करके खड़ा हो जाता है, पर मन में एक ही विचार होता है कि जैसे ही कोई मछली आए उसे उदरस्थ कर लूँ। बाहर से दिखता है ध्यानी - मौनी। चलता है बड़े धीमे से जैसे जीव रक्षा कर रहा हो, पर भीतर से मछलियों के वंश को समाप्त कर रहा है। इसलिए आर्जव धर्म कहता है भीतर और बाहर से एक हो जाओ सीधे हो जाओ। ध्यान रखना टेढ़ी लकड़ी चूल्हे में जलायी जाती है और सीधी लकड़ी हो तो उसके ऊपर झण्डा लगा दिया जाता है जो देश के सम्मान का प्रतीक है। सीधापन आपके सम्मान का प्रतीक है। आज हमारे भीतर की सरलता खो चुकी है। हम छल कपट में जीने के आदि हो गए हैं। भीतर से वक्र बाहर से सीधे बनकर मात्र दूसरे को छलना चाह रहे है लेकिन दूसरे को छलने का भाव ही अपने जीवन को छलनी बनाना है भीतर के परमात्मा को साकार करने के लिए निश्छल भाव आवश्यक है क्योंकि कुटिलता पत्थर की नौका है जो हमें पतन के महासागर में डुबो देती है।

उत्तम शौच-चक्कर लोभ और लाभ का

विजय कुमार जैन राघौगढ़ (गुना)

साफ और स्वच्छ दर्पण में उभरने वाला प्रतिबिम्ब स्वच्छ होता है। दर्पण के मलिन होने पर उसमें हमारी स्वच्छ छवि प्रतिबिम्बित नहीं होती। शान्त और स्वच्छ जल में हम अपना प्रतिबिम्ब देख सकते हैं, उसका अनुमान कर सकते हैं, लेकिन गन्दा जल हमारे किसी काम का नहीं। वैसे ही गन्दा मन भी हमारे किसी काम का नहीं। जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए स्वच्छता व सफाई जरूरी है। इसी सफाई का नाम शौच धर्म। ''शुचेभावं शौचम्'' शुचिता के भाव को शौच कहते हैं। आत्मा की विशुद्धि के लिए चित्त के दर्पण की स्वच्छता जरूरी है। पवित्रता अपेक्षित है, स्वच्छता होनी चाहिए। बाहर की स्वच्छता का हम दिन-रात ध्यान रखते हैं। अपने शरीर की स्वच्छता में पूर्णतः जुटे रहते हैं। हर क्षण उसके साज-सम्हाल में तत्पर रहते हैं, लेकिन बाहर की सफाई, सफाई नहीं, मन की सफाई ही सबसे बड़ी सफाई है। तन को नहीं, मन को साफ करो, हमने आज तक तन को साफ किया है, मन अछूता रहा है। शौच धर्म मन को परिमार्जित करने का धर्म है। इच्छा कभी तृप्त नहीं होती, किन्तु कोई मनुष्य उसे त्याग दे तो वह उसी क्षण पूर्णता को प्राप्त कर लेता है। इच्छायें आकाश के समान अनन्त हैं। इच्छाओं को कोई कितनी भी पूरी करने की कोशिश करे, वे कभी पूरी नहीं होती है। कुछ करना ही है तो इच्छा पूर्ति का एक ही मार्ग है संतोष। यदि संतोष आपको प्राप्त हो जाये, तो संभव है धर्म की ओर आपकी कुछ प्रवृत्ति हो सके। अन्यथा आपकी ये सब योजनायें आपके साथ ही जायेगी। आपाधापी के इस युग में हर व्यक्ति धन का दीवाना बना हुआ है। आज के सामाजिक मूल्य भी अर्थप्रधान बन गये हैं। आज के संदर्भ में यह कहा जाता है कि अर्थ है, तो कुछ अर्थ है, अन्यथा सब व्यर्थ है। इसी अर्थ की लिप्सा में वह न जाने कितना अनर्थ कर डालता है। अर्थ के लोभी मनुष्य को उचित-अनुचित, अच्छे-बुरे का कुछ भान नहीं होता। धन भाईयों के हृदय में घ्रणा पैदा कर देता है, धन परिवारों में विवाद उत्पन्न कर देता है, धन मित्रों को अलग-अलग कर देता है और गृह युद्धों का जनक भी धन है। धन संपदा से महत्वपूर्ण जीवन है। संतों ने कहा है ''जड़ धन की नहीं जीवन धन की चिंता करो''। गरीब वही है जिसके अंदर तृष्णा है। धन के अभाव में भी व्यक्ति के मन में यदि संतोष है तो वह सुखी रह सकता है। गरीबी नहीं तृष्णा दुष्कर्मों की जननी है। मनुष्य पाप अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये नहीं करता। पाप का कारण उसके मन में पल रही आकांक्षाऐं और तृष्णा है। हर मनुष्य जानता है कि धन सम्पदा उसके साथ जाने वाली नहीं है, उसे यह भी पता है कि मैं यदि अपने पुत्र-पौत्रों के लिये जोड़कर जाऊँ तो वे उसका उपभोग करें ही, यह जरूरी नहीं है। कुछ लोग भविष्य की चिन्ता में बड़े व्याकुल रहते हैं। भविष्य की चिन्ता में अपने वर्तमान को खोना बुद्धिमानी नहीं है। लोभी मनुष्य की वृति बड़ी विचित्र होती है। उसे अपने जीवन से भी अधिक धन की चाह होती है। ऐसे लोग ''चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए'' के सिद्धांत पर चलने वाले होते हैं। धन को जीवन निर्वाह का साधन मानकर चलना चाहिये। धन जीवन का साध्य नहीं है। धन जीवन की आवश्यकता हो सकती है पर अनिवार्यता नहीं। सन्त कहते हैं जीवन निर्वाह के लिये आवश्यक धन का संचय करो, पर उसे आसक्ति का रूप मत लेने दो। धन की आसक्ति मनुष्य को एक ऐसे अन्धकूप में ढ़केल देती है जिससे निकल पाना बहुत कठिन होता है। अपेक्षा है धन की आवश्यकता और अनिवार्यता के अन्तर को समझने की, साध्य और साधन के भेद को जानने की। तभी जीवन को समृद्ध और सुखी बनाया जा सकता है।

बेहोश करने से पहले डाक्टर यह क्यों पूछता है की कोई नकली दांत तो नहीं लगा है ?

इस उपकरण में एक प्रकाश का स्त्रोत होता है जो बैटरी पर चलता है। ऑपरेशन से पहले बेहोश करने वाले डॉक्टर को एनेस्टोलॉजिस्ट कहते हैं। आम तौर पर एनेस्टोलॉजिस्ट को इंटुबेशन करने की जरूरत नहीं पड़ती है। इंटूबेशन की जरूरत तब पड़ती है जब वायु नली में किसी प्रकार की रुकावट आने की संभावना हो तब (मुंह में थूक या रक्त जम कर वायु नली को बंद कर सकती है)। इसके अलावा अगर फेफड़े काम करना बंद कर दे तब बाहरी मदद से श्वास की व्यवस्था करनी पड़ती है। लार्यंगोस्कोप का उपयोग इंटुबेशन के दौरान होता है। इससे देख लिया जाता है की इंटुबेशन सही हो रहा है या नही।

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर।

अब इस काम में नकली दातों से क्या रिश्ता है ?

बात ऐसी है की यह laryngoscope काफी भारी और कठोर होता है । हाथ थोड़ा इधर उधर हो जाय तो दातों पर दबाव आ सकता है जिससे दांत टूट सकते हैं। यही कारण है की एनेस्टोलॉजिस्ट पहले से पूछ लेता है। अगर denture पहना हुआ है तो निकाल लिया जाता है। अगर इंप्लांट है या क्राउन है तो बता दिया जाता है की ऑपरेशन के वक्त हो सकता है की यह टूट जाए। इसके लिए खेद है पर उस तोड़ फोड़ का जुर्माना मत मांगिए।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

भक्ति भाव से मनायेगे अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज का 49वां अवतरण दिवस

पूरे देश से शामिल होंगे श्रद्धालु, मुनि श्री ससंघ के सानिध्य में आयोजित स्वधर्म साधना शिविर में उमड़े श्रद्धालु, मनाया उत्तम आर्जव धर्म

फोटो : कुमकुम फोटो मानसरोवर साकेत, मोबाइल 9829054966

जयपुर. शाबाश इंडिया

मानसरोवर के मीरामार्ग स्थित आदिनाथ भवन में चातुर्मास कर रहे अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज का 49 वां अवतरण दिवस बुधवार 11 सितम्बर को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि मानसरोवर के गौखले मार्ग स्थित सामुदायिक केन्द्र सेक्टर 9 में बनाये गये विशाल सभागार में दोपहर 2.00 बजे आयोजित होने वाले इस विशाल आयोजन में 49 श्रावक श्रेष्ठी मुनि श्री के पाद पक्षालन व शास्त्र भेट करने का पुण्यार्जन करेगें। सायंकाल महाआरती होगी जिसमें सभी श्रद्धालु अपने अपने घरों से दीपक लाएंगे। इससे पूर्व मीरामार्ग के सैक्टर 9 स्थित सामुदायिक केन्द्र पर मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में दशलक्षण महापर्व मनाया गया। इस मौके पर दस दिवसीय स्व धर्म शिविर के तीसरे दिन प्रातः 5.30 बजे से 7.00 बजे तक उत्तम आर्जव धर्म पर अर्हं योग एवं ध्यान करवाया गया। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि शिविर में प्रातः 5.00 बजे से रात्रि 8.30 बजे तक आत्म साधना के साथ पूजा भक्ति के विशेष आयोजन किये गये। वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाडा के अनुसार इस मौके पर उत्तम आर्जव पर अपने प्रवचन में आचार्य श्री ने शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मायाचार, कुटिलता छोड़कर सरलता व निश्चलता अपनाने का आव्हान किया। शिविर में तत्वार्थ सूत्र का विधान प्रारंभ हुआ जिसमें सौधर्म इन्द्र इन्दर, महेश, अशोक, राजेन्द्र , अंकुर, अरिहंत, नमन, संभव, कविश, अधिराज, क्रियांश, आगत एवं समस्त बाकलीवाल परिवार अशोका इलेक्ट्रिकल्स वालो को मिला। कुबेर इन्द्र प्रेम देवी, पारस, राजीव, संजय कासलीवाल कुम्हेर वाले, चक्रवर्ती छुट्टन देवी सुशील पहाड़िया ने सौभाग्य प्राप्त किया। मुनि श्री ने अपने प्रवचन में तत्वार्थ सूत्र के तीसरे अध्याय में सात भूमियों के बारे में, वहां के नारकीय जीवन के बारे में, उनको होने वाले कष्टों के बारे में तथा जैन भूगोल को समझाया। मुनि श्री ने लोक के बारे में बताया कि मध्यलोक में मनुष्य ढाई द्वीप तक जा सकता है। जम्बू द्वीप के बारे में, उसके क्षेत्रों के बारे में, पर्वत, सरोवर, सुमेरु पर्वत आदि के बारे में बताते हुए 39 अर्घ्य समर्पित करवाये। इससे पूर्व धर्म सभा का दीप प्रज्जवलन व मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के पाद पक्षालन का समाजश्रेष्ठी अजय, विजय, संजय कटारिया परिवार ने सौभाग्य प्राप्त किया। सायंकाल प्रश्न मंच, आरती, प्रतिक्रमण पाठ के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये । इस मौके पर राजस्थान जैन सभा जयपुर के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष दर्शन बाकलीवाल, मंत्री विनोद जैन कोटखावदा, संयुक्त मंत्री भानू छाबड़ा, कोषाध्यक्ष राकेश छाबड़ा, अशोक जैन नेता, प्रदीप जैन आदि ने सहभागिता निभाई। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि बुधवार 11 सितम्बर को मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में दशलक्षण महापर्व के दौरान उत्तम शौच धर्म मनाया जाएगा इस मौके पर प्रातः 5.30 बजे से 7.00 बजे तक अर्हं योग ध्यान, 7 बजे से श्री जी का अभिषेक, शांतिधारा, तत्वार्थ सूत्र विधान होगा। प्रातः 9.00 बजे मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के मंगल प्रवचन होगें दोपहर में 1.30 बजे से धर्म की कक्षा, तत्वार्थ सूत्र प्रवचन, दशम धर्म कक्षा, सायंकाल 6.00 बजे से प्रश्न मंच, आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। आयोजन से जुड़े हुए विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि मुनि प्रणम्य सागर महाराज का 49 वां अवतरण दिवस बुधवार 11 सितम्बर को दोपहर 2 बजे से हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस मौके पर 49 श्रावक श्रेष्ठी मुनि श्री के पाद पक्षालन व शास्त्र भेट करने का पुण्यार्जन करेगें। सायंकाल महाआरती होगी जिसमें सभी श्रद्धालु अपने अपने घरों से दीपक लाएंगे।

दशलक्षण महापर्व का तीसरा दिन

मनाया वीतराग धर्म का उत्तम आर्जव लक्षण

अमन जैन कोटखावदा. शाबाश इंडिया

कोटखावदा। दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों के चल रहे दशलक्षण महापर्व में तीसरे दिन वीतराग धर्म का लक्षण उत्तम आर्जव भक्ति भाव से मनाया गया। इस मौके पर कस्बे सहित आसपास के मंदिर परिसर जयकारों से गुंजायमान हो उठे। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि दिगम्बर जैन मंदिरों में प्रातः श्री जी के अभिषेक, शांतिधारा के बाद दशलक्षण धर्म की विधान मंडल पर अष्ट द्रव्य से पूजा अर्चना की गई। इस मौके पर संतों एवं विद्वानों ने उत्तम आर्जव पर प्रवचन दिया जिसमें बताया गया कि " कपट न कीजे कोय, चोरन के पुर ना बसे। सरल सुभावी होय, ताके घर बहु सम्पदा।। उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी। मन में होय सो सचन उचरिये, वचन होय सो तन सौ करिये।। " अर्थात मनुष्य को सरल स्वभावी होना चाहिए। जो उसके मन में हो वही बात अपनी कथनी में कहनी चाहिए। किसी को दगा नहीं देना चाहिए। किसी के प्रति छल कपट की भावना नहीं रखनी चाहिए। आर्जव धर्म की संगीतमय पूजा की गई। विनोद जैन कोटखावदा के मुताबिक कोटखावदा के बडाबास स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में अध्यक्ष महावीर गंगवाल एवं मंत्री दीपक वैद के नेतृत्व में दशलक्षण महापर्व मनाया गया जिसमें प्रातः अभिषेक, शांतिधारा के बाद धर्म के उत्तम आर्जव लक्षण की पूजा की गई। सायंकाल महाआरती के बाद णमोकार महामंत्र के जाप, आदिनाथ चालीसा तथा 48 दीपकों से ऋद्धि मंत्रों से युक्त भक्तामर स्तोत्र महाअर्चना की गई। समाजसेवी रितेश वैद एवं अमन जैन कोटखावदा के मुताबिक रात्रि में धार्मिक जैन अन्ताक्षरी का आयोजन किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं को धर्म के सम्बन्ध में भजनों के माध्यम से ज्ञान वर्धक जानकारी दी गई । इससे पूर्व सोनू, सुनिता जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अन्त में रियांशी जैन के निर्देशन में उत्तम आर्जव धर्म पर एक नाटक का मंचन किया गया।

जैनाचार्यों एवं साधु साध्वियों की निश्रा में सकल जैन समाज का सामूहिक क्षमापना का आयोजन

जिनशासन में आस्था रखने वाले श्रावक यदि मजबूत बनते हैं तो हमारी एकता अखंड रह सकती है : युवाचार्य महेन्द्र ऋषि जी महाराज

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नेई। श्री जैन महासंघ चेन्नई के तत्वावधान एवं श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी महाराज के पावन सानिध्य में एएमकेएम जैन मेमोरियल सेंटर में मंगलवार को सामूहिक क्षमापना पर्व आयोजित हुआ। इस मौके पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। इस दौरान आचार्य वर्धमानसागर सूरीश्वरजी, आचार्य देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी, आचार्य युगोदयप्रभ सूरीश्वरजी, मुनिश्री आर्यशेखर विजयजी, खरतरगच्छीय गणिवर्य मनीषप्रभ सागरजी, तेरापंथ संप्रदाय के मुनिश्री हिमांशु कुमारजी, मुनिश्री वैभवरत्न विजयजी, दिगंबर परंपरा के साध्वी विशिष्ट मतिजी, साध्वी संघमित्राश्रीजी, उपप्रवर्तिनी कंचनकंवर जी महासती राजमती जी आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा प्राप्त हुई। इस मौके पर श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी ने कहा कि क्षमा देना और क्षमा लेना वीरों का आभूषण है, यह कायरता का व्यवहार नहीं है। आज महावीर के शासन के अनेक महापुरुष एवं भगवती स्वरुपा साध्वीवृंद यहां उपस्थित हैं। उन्होंने कहा परमात्मा ने प्रत्येक भव्य आत्मा के लिए क्षमा धर्म बताया है। कई लोगों ने अपने आचरण से परमात्मा का दिया हुआ क्षमा रुपी अमृत को उपहास का विषय बना दिया है। हमारे अवचेतन मन में कई अवधारणाएं रही हुई है, उन्हें निकालना है। आपके मन में पड़े हुए भेद को निकालना जरूरी है, तभी जैन एकता बनी रहेगी। जिनशासन में आस्था रखने वाले श्रावक यदि मजबूत बनते हैं तो हमारी एकता अखंड रह सकती है। जिनशासन का प्रांगण सिर्फ जिनेश्वर की आराधना का स्थल है, रणभूमि नहीं। उन्होंने कहा जिनशासन की धरोहर को हमें सुरक्षित रखना है। आचार्यश्री युगोदयप्रभ सूरीश्वरजी ने कहा कि कलिकाल में सबसे बड़ी शक्ति संघ है। यह तीर्थंकरों के लिए भी पूजनीय है। जिनशासन को एकांतवाद से नुकसान हुआ है। हमें अपकारी के प्रति भी उपकारी भावना रखनी है। उन्होंने कहा क्षमा को अपनाकर जीवन को धन्य बनाएं। आचार्य देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी ने कहा कि संगठन नहीं होगा तो विघटन होने वाला है। घर के लोग घर में आ जाए तो वह एकता ही है। महावीर के शासन तले आ जाओ तो सभी एक है। मन के भरोसे मत चलिए, आत्मा के भरोसे चलो। शासन के सब कार्य पूर्ण कर जीवन को धन्य बनाएं। गणिवर्य कल्याण पद्मसागरजी ने कहा हमें ढोंग का नहीं, ढंग का जीवन जीना है। आपके अंदर रहे हुए गुण- वैर की आग को स्पर्श कर लें तो गुण गुण नहीं रहेंगे। कोई व्यक्ति के साथ तकरार हैं और आप क्रोध में है तो समझना आपके अंदर से क्रोध निकला। क्षमा, मैत्री होती तो वही निकलती। उन्होंने 2550वां महावीर निर्वाण कल्याणक एकजुट होकर मनाने की प्रेरणा दी। गणिवर्य मनीषप्रभ सागरजी ने कहा कि दुःख का कारण धर्म का अभाव है, सुख का कारण धर्म का प्रभाव है और शांति का कारण खुद का स्वभाव है।

ऋजुता धारण करो, अकड़न तो मुर्दे की पहचान है : आर्यिका वर्धस्व नंदनी

मनोज जैन नायक। शाबाश इंडिया

तिजारा, अलवर । अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा की धरा पर वषायोगरत आचार्य श्री वसुनन्दी महाराज की सुशिष्या आर्यिका वर्धस्व नंदिनी माताजी ने दस लक्षण पर्व के तीसरे दिवस वृहद समवशरण महाअर्चना के दौरान उत्तम आर्जव धर्म पर प्रवचन करते हुए कहा कि मार्दव धर्म के पश्चात ही व्यक्ति के चित्त में आर्जव धर्म का बीजारोपण होता है। क्योंकि जब तक हृदय में ऋजुता नहीं होगी तब तक कोई बीज अंकुरित नहीं होगा और अकड़न तो वैसे भी मुर्दा की पहचान है। आर्यिका ने कहा कि उत्तम आर्जव धर्म वह है जो व्यक्ति को बनावटी दुनिया से बाहर निकालता है।आज प्रत्येक व्यक्ति मोबाइल से लेस है, क्योंकि आज मोबाइल की दुनिया है। आप ही बताओ क्या जैसे आप इंस्टाग्राम फेसबुक व्हाट्सएप पर दिखते हो असल में जिंदगी में भी वैसे ही हो क्या? रनहीं आपर जैसे हो वैसे दिखते नहीं,जैसे आप हो वैसे दिखते नहीं। आर्जव धर्म तो कहता है जो है वह रहें, जो नहीं है वैसे बनने का प्रयास करना तो छल व मायाचारी है।

वक्रता को छोड़ सीधे रास्ते को अपनाये: जैन मुनि आचार्य आर्जव सागर

सौरभ जैन. शाबाश इंडिया

पिड़ावा। दसलक्षण पर्व का तीसरा दिन उत्तम आर्जव धर्म बड़े ही भक्ति भाव के साथ मनाया गया। समाज प्रवक्ता मुकेश जैन चेलावत ने बताया कि परम पूज्य आचार्य 108 श्री आर्जव सागर महाराज ससंघ का 37वां चातुर्मास श्री सांवलिया पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र बड़ा मंदिर मे चल रहा है और प्रतिदिन ज्ञान की गंगा बह रही है। दश लक्षण धर्म के तिसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म के बारे में आचार्य श्री आर्जव सागर महाराज ने बताया कि आर्जव का अर्थ सरलता, सीधापन होना। अपनी कभी मायाचारी नहीं होना चाहिये। जैसा दृष्टि ने लक्ष्य बनाया है हमारी दृष्टि सीधी उसी लक्ष्य को और होनी चाहिये। कभी उसमें लचीला पन नहीं आना चाहिए जो दृष्टि में सीधापन होगा तो लक्ष्य को भेदने से कोई रोक नहीं सकता भले कोई कितना भी छल कपट हमारे साथ करे किंतु हमें उसके साथ सरलता रखनी चाहिए। कपट करके जितने से अच्छा है परिणाम को सरल बना कर हारना। टेढ़ी चाल चल कर सकुनी ने चौपड़ के खेल में तो पांडवों को जीता दिया किंतु धर्म युद्ध में हरा नहीं पाया इसलिये वक्रता को छोड़ सीधे रास्ते को अपनाएं।संत कहते है। जो तन से, मन से ओर वचन से सरल होता है वही जीवन में कुछ कर सकता है। जिसके मन में, तन में, वचन में कपट भरा हो वह कभी सरल नहीं हो सकता कपट करके चुनाव जीता जा सकता है, किंतु कपट करके सरल धर्मी नहीं बना जा सकता है। हमें स्वयं को सीधा करना है किसी को टेढ़ा बनाने का पुरुषार्थ नहीं करना किंतु लोग आजकल दूसरों को टेढ़ा बनाने के लिये पुरुषार्थ करते है, टेढ़ी उंगली से घी निकालने में लगे रहते है किंतु यह सरल समझ नहीं रखते की डिब्बे को गर्म कर ले, तपा ले तो घी सीधा पिघलकर नीचे आ जायेगा यही आर्जव धर्म है। दोपहर में आचार्य श्री द्वारा तत्त्वार्थ सूत्र की कक्षा में तिसरे अध्याय के बारे में बताया गया शाम को गुरू भक्ति के बाद मांगलिक भवन में आरती व पंडित मुकेश जैन सुसनेर के द्वारा शास्त्र स्वाध्याय की गई। उसके पश्चात ब्रम्हानंद सागर पाठशाला के अध्यापकों निक्कु, रानी, सोनु के द्वारा णमोकार मंत्र की महिमा नाटक बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

रेवती रेंज इंदौर मे बनेगा गुरु मंदिर

इंदौर. शाबाश इंडिया

आज उत्तम आर्जव धर्म के दिन पूज्य विनम्र सागर जी महाराज ने आचार्यश्री को याद करते हुए कहा की आज के दिन यदि हमने आचार्यश्री को गुरु माना है तो उनसे किये वादों से छल नहीं करना, विश्व मे प्रथम बार महामहिम आचार्य विद्यासागर जी महाराज की

लगभग 51 इंच ऊँची रजत की पद्मासन प्रतिमा रेवती रेंज इंदौर मे बनने वाले सर्वतोभद्र जिनालाय के मुख्य द्वार के पास गुरु मंदिर मे स्थापित होंगी, धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने कहा कि हम सभी ने आचार्य श्री को अपना भगवान मना है उनकी प्रतिमा मे आप अपनी और से कम से कम 1 किलो चांदी प्रदान करके गुरूजी को विन्याजलि अर्पित कर गुरूजी की मूर्ति बनवाने मे सहयोग प्रदान कर सकते है जेसे ही गुरु विनम्र सागर जी ने अहावान किया कि समाज श्रेष्ठीयो द्वारा अपनी और अपने परिवार की और से चांदी देने वाले समाज जनों की भीड़ उमड़ पड़ी गुरु देव ने कहा कि यह चांदी सिर्फ गुरूजी की प्रतिमा बनाने मे ही लगेगी। और सभी दातारों को आशीर्वाद दिया।

कृष्ण रुक्मणी विवाह में श्रद्धालु हुए भाव-विभोर

अर्पित जैन. शाबाश इंडिया

भैंसलाना। कस्बे के शंकर भगवान के मंदिर के पास प्रजापति समाज धर्मशाला में चल रही भागवत कथा के दौरान भगवान कृष्ण व रुक्मणी विवाह के मौके पर छप्पन भोग झांकी सजाई गई।भगवान कृष्ण व रुक्मणी के विवाह की कथा में श्रद्धालु भाव विभोर हो गए।कथावाचक अंजनी जी महाराज अयोध्या धाम के श्रीमुख से श्रीकृष्ण-रुक्मणी विवाह प्रसंग श्रद्धालुओं ने एकाग्रता से सुना।भगवान के विवाह की सजीव झांकी सजाई गई और पांडाल में धूमधाम से श्रीकृष्ण व रुक्मणी विवाह हुआ। गाजे बाजे के साथ श्रीकृष्ण भगवान की बारात निकाली गई और श्रद्धालुओं ने पुष्प वर्षा के साथ भगवान के जयकारे भी लगाए।कथा के दौरान रासलीला के प्रसंग के दौरान श्रद्धालु झूम उठे।

महान व्यक्तित्व का स्वर्गारोहण

मुनि श्री वांग्मय सागरजी ने सल्लेखनापूर्वक समाधि ली

कुलचाराम, हैदराबाद। आर्षमार्ग, श्रमण परंपरा को बड़ा योगदान, एकांतवाद के निरसन में बड़ी भूमिका निभाते अनेक पुरस्कारों, उपाधियों से विभूषित पंडित शिवचरण लाल वर्तमान में पूज्य मुनिश्री वाङ्मय सागर जी की सल्लेखना पूर्वक समाधि तेलांगाना के मेडक जनपद के कुलचारम में विघ्नहरण पार्शवनाथ अतिशय क्षेत्र में कल सोमवार 9 सितंबर को रात्रि 9.47 पर अन्तर्मना तपाचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महामुनिराज के संघ सानिध्य में हो गयी। विगत 28 अगस्त को अन्तर्मना ने उनको मुनिदीक्षा प्रदान कर महाव्रतों का आरोपण किया था व 19 अगस्त रक्षाबंधन के दिन उनकी क्षुल्लक दीक्षा हुई थी व उन्हें वांग्मय सागर नाम दिया गया था। पूरे देश के प्रमुख स्थानों के साथ ही अमेरिका जाकर उन्होंने धर्म की प्रभावना की तो जयपुर के श्री हुकुम चंद्र जी भारिल्ल को कोलकाता में शास्त्रार्थ में हराकर धर्म का ध्वज फहराया। श्रमण भारती मैनपुरी के संस्थापक सदस्य के साथ ही मैनपुरी जैन समाज के लिए बहुत योगदान दिया। उन्होंने जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में एक कमरे का भी निर्माण कराया। 2002 के कम्पिल पंचकल्याणक में वह समिति के अध्यक्ष रहे। मुनि श्री सहज सागर जी ने बताया कि मैंनें 77 और 79 में उनके साथ ही अहमदाबाद व सूरत साथ जाकर ज्ञान प्राप्त किया था व उनके बड़ा मंदिर व नेमिनाथ जिनालय में उनकी स्वाध्याय सभा से बहुत लाभ मिला। अंतिम समय में उनकी धर्मपत्नी उनके सुपुत्र प्रशांत, पुत्रवधु अन्तर्मना के प्रिय शिष्य प्रवर्तक मुनिश्री सहज सागर जी, जो पंडित जी के गृहस्थाश्रम के भाई भी हैं, ने जानकारी देते हुए बताया कि मैनपुरी के पंडित जी 25 जुलाई को अपने सुपुत्र प्रशांत के पास से अपनी धर्मपत्नी व पुत्र के समधी श्री राकेश जी के साथ यहां पधारे थे व 30 जुलाई को उन्होंने 85 वर्ष की आयु में पूरी चेतना व निरोगावस्था में सल्लेखना हेतु आचार्य श्री को श्री फल अर्पित किया था जिस पर विचार कर उन्हें दीक्षा प्रदान की थी। पंडित जी बहुत विद्वान थे। पांच हजार से ज्यादा श्लोक व गाथायें उन्हें कंठस्त थीं। घिरोर के पास नगला इंद में श्री बटेश्वरीलाल जी के परिवार में जन्में 1970 में मैनपुरी आये। आपका कपड़े का बड़ा व्यापार था उसके साथ ही आपने खुद स्वाध्याय के बल पर बहुत ज्ञान का अर्जन कर सोनगढ़ व एकांतवाद का पदार्फाश कर श्रमण परंपरा के लिए अपना महती योगदान दिया। शास्त्री परिषद के सरंक्षक व त्रयभ विद्वत महासंघ के अध्यक्ष अनेक पुरस्कारों व उपाधियों से विभूषित किये गए। दश लक्षण पर्व पर अर्चना, समधी राकेश जी सुपुत्रियां संध्या, प्रतिमा, कविता सपरिवार, श्रीमती साधना मातेश्वरी डॉ सौरभ उनके साथ ही थे।

छल कपट रहित होकर कथनी ओर करनी एक समान हो वहीं उत्तम आर्जव धर्म-मुनि सुगमसागर

सुपार्श्वनाथ पार्क में दशलक्षण पर्व के तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म की आराधना

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। आचार्य श्री सुंदरसागरजी महाराज ससंघ के सानिध्य में श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के तत्वावधान में दसलक्षण (पर्युषण) महापर्व की आराधना शहर के शास्त्रीनगर हाउसिंग बोर्ड स्थित सुपार्श्वनाथ पार्क में तीसरे दिन मंगलवार को भी श्रद्धा व भक्तिभावना के साथ जारी रही। दशलक्षण महापर्व के तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म की आराधना की गई। प्रवचन में मुनि सुगमसागर महाराज ने कहा कि जिसमें छल-कपट से रहित सहज,सरल सीधा व्यवहार दिखता हो उसे आर्जव कहते है। अपने मन को मायाचारी से बचाकर सरल,सीधा बनाने का उद्यम विशेष होता है उसे उत्तम आर्जव कहते है। उन्होंने कहा कि मन में इतनी सरलता हो कि उसे वाणी से सहज रूप से कह सके। मन,वचन व काया की सरलता होनी चाहिए। सम्यक दर्शन पूर्वक वितरागी सरलता को उत्तम आर्जव धर्म कहते है। जहां छल कपट रहित होकर कथनी ओर करनी एक समान हो वहीं उत्तम आर्जव है। हमारी भावों की शुद्धता होना भी जरूरी है। हम मन,वचन ओर काय से एक रूप हो जाए तो हम सही मायने में आर्जव धर्म को अपने में प्रकट कर सकेंगे। जब तक हम ऐसा नहीं कर पाते तब तक इस धर्म की भाव आराधना नहीं हो सकती। श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के अध्यक्ष राकेश पाटनी ने बताया कि दशलक्षण पर्व के तीसरे दिन सुपार्श्वनाथ मंदिर में मुख्य शांतिधारा व आरती का सौभाग्य गुणमालादेवी पंकज बड़जात्या परिवार ने लिया। सौधर्मेन्द्र का इन्द्र व आरती का सौभाग्य संतोष मोनिका, नीरज, सोनू, भावित,रक्षित बड़जात्या परिवार को प्राप्त हुआ।मीडिया प्रभारी भागचंद पाटनी ने बताया कि आचार्य सुंदरसागर महाराज ससंघ के सानिध्य में उत्तम आर्जव धर्म पर पूजा अर्चना मय भक्ति संगीत के साथ संगीतकार हर्ष भोपाल एवं पंडित पदमचंद काला के निर्देशन में कराई गई जिसका कई श्रावक-श्राविकाओं ने लाभ लिया। पूजा के पूर्व श्रीजी को जुलूस के साथ श्रद्धालुओं द्वारा पांडाल में ले जाया गया। दोपहर में सरस्वती पूजा, तत्वार्थ सूत्र पूजा एवं वाचन हुआ। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत त्रिशला महिला मण्डल द्वारा धार्मिक तंबोला का आयोजन हुआ। शाम को सामायिक एवं प्रतिक्रमण हुआ। दशलक्षण पर्व के चौथे दिन उत्तम शौच धर्म की आराधना होगी। इस दौरान प्रतिदिन सुबह 5 बजे ध्यान, सुबह 6.15 बजे नित्य अभिषेक एवं शांतिधारा, सुबह 7.30 बजे से श्रीजी का पांडाल में आगमन, सुबह 7.45 बजे से संगीतमय पूजन एवं मंगल प्रवचन हो रहे है। आहारचर्या के बाद दोपहर 2 बजे से तत्वार्थसूत्र पूजन,सरस्वती पूजन व तत्वार्थ सूत्र वाचन किया जा रहा है। शाम 6 बजे से प्रतिक्रमण एवं सामायिक, शाम 7.15 बजे से श्रीजी की आरती एवं शाम 7.40 बजे से आचार्यश्री की भक्तिमय आरती की जा रही है।

जैन मंदिरों में भक्ति भाव से की गई पूजा अर्चना

अर्पित जैन. शाबाश इंडिया

भैंसलाना। कस्बे सहित क्षेत्र के भादवा,मंडाभीमसिंह,रामजीपुरा,मिंडा,सिनोदिया,देवली,लूणवा, हिंगोनिया,ड्योढी आदि गावों सहित परिक्षेत्र में दिगंबर जैन समाज के दसलक्षण पर्व के तहत धार्मिक आयोजन आयोजित हो रहे हैं। मंगलवार को भैंसलाना के पद्मप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में दसलक्षण पर्व के तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म के तहत सुबह अभिषेक,शतिधारा और अष्टद्रव्यों से पूजा की गई।

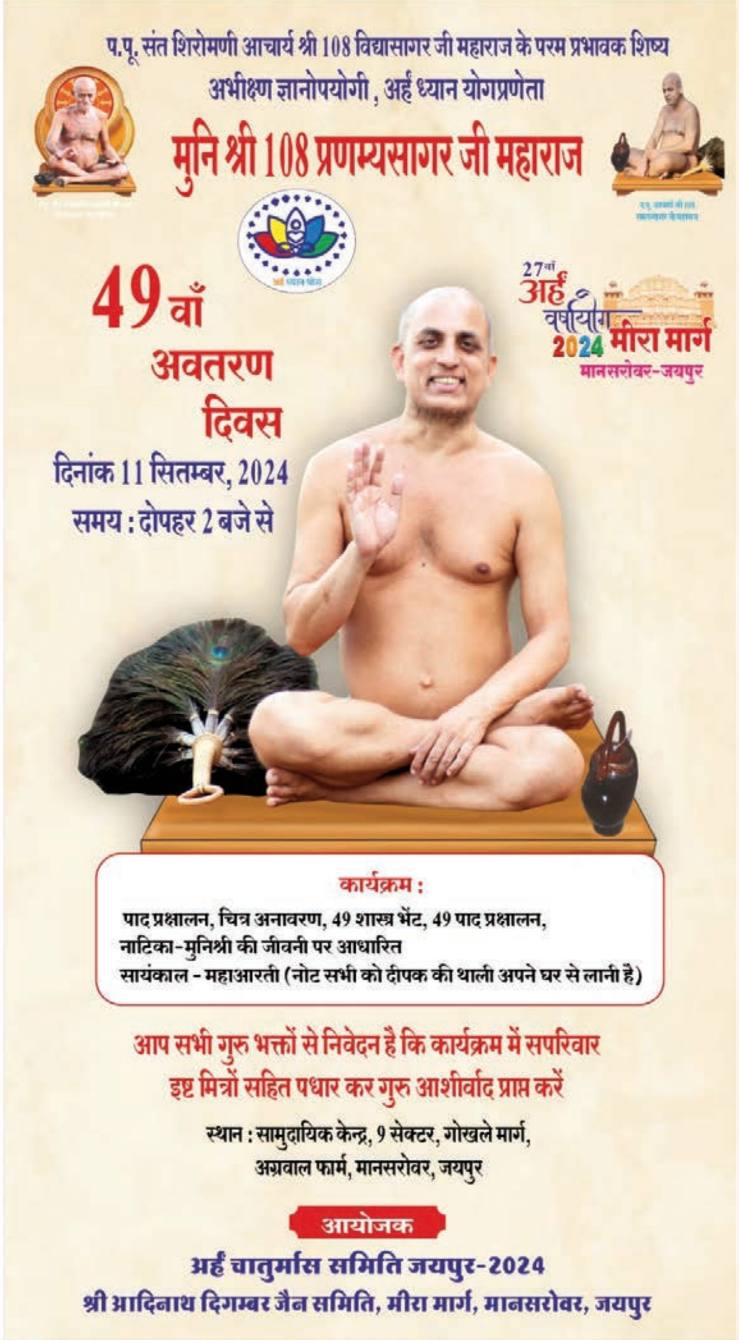

ज्ञानतीर्थ टोडरमल स्मारक भवन में दशलक्षण महापर्व का तीसरा दिन

वस्तु का स्वभाव ऋजु है और उसको जानने वाला आर्जव: सुमतप्रकाश जैन

जयपुर. शाबाश इंडिया। पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के बैनर तले बापू नगर स्थित ज्ञानतीर्थ पंडित टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे दशलक्षण महापर्व के तीसरे दिन सोमवार को उत्तम आर्जव धर्म की आराधना की गई। इस मौके पर हुए दशलक्षण विधान के दौरान आसपास का क्षेत्र भक्ति और आस्था के रंग में डूब गया। 17 सितम्बर तक मनाए जाने वाले इस महापर्व में दषलक्षण विधान,विद्वानों के प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित अनेक आयोजन हो रहे है। महामंत्री परमात्म प्रकाश भारिल्ल ने बताया कि आज सुबह श्रीजी के अभिषेक के बाद पर साजों के बीच दषलक्षण विधान हुआ। इस दौरान मेरे मंन मंदिर में आन....आया दशलक्षण पर्व महान ....जैसे भजनों की स्वर लहरियों के बीच वातावरण भक्तिमय हो गया। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए विश्व सविख्यात बाल ब्रह्मचारी सुमतप्रकाश जैन, खनियाधाना ने उत्तम आर्जव के बारे में समझाते हुए कहा कि आत्मा का श्रद्धान ही पर्याप्त है उसमें मन- वचन- काय की आवश्यकता नहीं। आत्मा का अनुभव करना सरल है पर उसका वर्णन करना असंभव है। आत्मानुभूति करनी नहीं है हो रही है बस यह जानना है। आत्मा को जानने से विकार आत्मा में नहीं दिखते। वस्तु का स्वभाव ऋजु है और उसको जानने वाला आर्जव। उन्होने आगे कहा कि मन में जो विचार है, वही वाणी में हो और वही आपकी चर्या होनी चाहिए। इन तीनों की एकरूपता ही आर्जाव धर्म है। भीतर के छल-कपट मायाचारी को यदि नष्ट करना हे तो उसका एकमात्र मार्ग उत्तम अर्जव धर्म है। इसको जीवन में धारण कर ही आप छल-कपट से रहित हो सकते हैं। मुनि ने कहा कि बिलाव दूध पीते समय आपदा नही देखता। जिस प्रकार बिलाब दूध पीने में इतना मगन हो जाता है कि उसे डंडों का भय नहीं होता, उसी तरह यह जीव संसार में धन-दौलत, माया के मोह में इतना मोहित हो जाता है कि उसे नर्क आदि का भय नहीं होता है। लेकिन जब कर्मों के डंडे पड़ते हैं तो उसे समझ आता है। इसीदिन साम को डॉ. शांतिकुमार पाटील के प्रवचन हुए और इसके बाद रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

कमला नगर जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व के तीसरे दिन मनाया उत्तम आर्जव धर्म

आगरा. शाबाश इंडिया

सकल दिगंबर जैन समाज के दशलक्षण महापर्व के तीसरे दिन मंगलवार को मंदिरों में उत्तम आर्जव धर्म की पूजा की गई। पूजन के साथ मंदिरों में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। मेडिटेशन गुरु उपाध्याय श्री विहसंत सागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में आगरा के कमला नगर स्थित डी ब्लॉक के श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर पर बने विशाल पंडाल में 8 सितम्बर से दस दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व चल रहे हैं। जहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में भक्त उपाध्यायश्री के मंगल सानिध्य में प्रत्येक धर्म का पालन कर रहे हैं। महापर्व के तीसरे दिन भक्तों ने 10 सितम्बर को उत्तम आर्जव धर्म की शुरूआत श्रीजी के अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ की। भक्तों ने उपाध्यायश्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में गुरु भक्ति कर अष्ट द्रव्यों के साथ उत्तम आर्जव धर्म का पूजन किया गया। पूजन के बाद सौभाग्य शाली भक्तों ने उपाध्यायश्री के समक्ष शास्त्र भेंटकर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। उपाध्याय श्री ने भक्तों को उत्तम आर्जव धर्म के महत्व को समझाया। सायःकाल भक्तों ने संगीतमय उपाध्यायश्री एवं भगवान महावीर की मंगल आरती की और रात्रि में कमला नगर महिला मंडल द्वारा त्याग का फल नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी।मीडिया प्रभारी शुभम जैन ने बताया कि दशलक्षण महापर्व के चौथे दिन कमलानगर जैन मंदिर में उत्तम शौच धर्म मनाया जाएगा।इस अवसर पर प्रदीप जैन पीएनसी, जगदीश प्रसाद जैन,मनोज जैन बाकलीवाल,राहुल जैन,पारस बाबू जैन,यशपाल जैन, राकेश जैन बजाज,अनुज जैन,अनिल जैन,नरेश जैन,अनिल रईस, समकित जैन,शुभम जैन,समस्त कमला नगर जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। रिपोर्ट : शुभम जैन

कीर्तिनगर जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व का तीसरा दिन

ऋजुता के भाव होना ही आर्जव: मुनिश्री श्री समत्व सागर

जयपुर. शाबाश इंडिया

टोंक रोड,कीर्ति नगर के जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर मंगलवार को उत्तम आर्जव धर्म की आराधना की गई। इस मौके पर मुनिश्री श्री समत्व सागर जी महाराज ने उत्तम आर्जव धर्म के बारे में बताया। साम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत जिन आगम की महिमा और जैन धर्म की पहचान कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई,जिसे सभी ने पसंद किया। मंदिर अध्यक्ष अरुण काला व प्रचार संयोजक आशीष बैद ने बताया कि आज सुबह श्रीजी की शांतिधारा के बाद साजो के बीच पूजा की गई। इस मौके पर हुई धर्मसभा को संबोधित करते हुए धर्मसभा में मुनि श्री समत्व सागर जी महाराज ने उत्तम आर्जव धर्म को समझाते हुए कहा कि सरलता भगवान के द्वार में प्रवेश करने का साधन है। मन में जो विचार है, वही वाणी में हो और वही आपकी चर्या होनी चाहिए। इन तीनों की एकरूपता ही आर्जव धर्म है। भीतर के छल-कपट मायाचारी को यदि नष्ट करना हे तो उसका

एकमात्र मार्ग उत्तम आर्जव धर्म है। इसको जीवन में धारण कर ही आप छल-कपट से रहित हो सकते हैं। मन से माया शल्य को निकालने से ही आत्मा में निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा। मोह-माया में उलझे रहने पर व्रत और तप सब निरर्थक हैं। यह आर्जव भाव ही मोक्ष के लिए उत्तम मार्ग है। जहां पर कुटिल परिणाम का त्याग कर दिया जाता है, वहीं पर आर्जव धर्म प्रकट होता है। यह अखंड दर्शन और ज्ञान स्वरूप है और परम सुख का पिटारा है। जीवन में सरलता आ जाना ही उत्तम आर्जव है। ऋजुता के भाव होना ही आर्जव है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे जीवन मे ऋजुता तभी आएगी जब हम अन्दर बाहर से एक हो जाए। मन ,वचन ,काय में समानता आना ही आर्जव भाव है। हमारे भावो में जितनी सरलता आती जाएगी हमारी दुर्गतियों का नाश होता जाएगा। सरलता का नाम ही आर्जव है। उन्होंने आगे कहा कि सरलता योग्यता प्रदान करती है। योग्यता अर्थ और परमार्थ में सफलता प्रदान करती है। सरलता सज्जनों का गुण है। मन का मैल निकलने से ह्रदय सरल और निर्मल होता है। सरल और निर्मल व्यक्ति समाज का दर्पण होता है। दर्पण के समान व्यक्ति ही समाज की कालिख को दिखा सकता है और वही समाज के बिखरे हुए मोतियों को पिरोकर माला बनाने वाला सुई धागा हो सकता है। जहां कुटिलता मायाचारी होती है, वहां रत्नत्रय एवं उत्तम क्षमादि दशलक्षण की माला टूट जाती है।

झोटवाड़ा के श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में श्री भक्तामर दीप अनुष्ठान का भव्य आयोजन हुआ

जयपुर. शाबाश इंडिया। पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व पर भादप्रद माह शुक्ल पक्ष षष्ठी सोमवार को सायः 8 बजे से श्री विद्यासागर यात्रा संघ, जयपुर द्वारा रिद्धि सिद्धि मत्रों से युक्त सर्व संकट निवारक श्री भक्तामर अनुष्ठान का भव्य आयोजन किया गया। इस अनुष्ठान में 48 मंडलों एवम 1 प्रमुख मंडल सहित 2352 दीपको में दीप प्रज्जवलन कर श्री आदिनाथ भगवान की आराधना की गई। इस पावन अनुष्ठान में सकल दिगंबर जैन समाज झोटवाड़ा के सदस्यों ने सम्मिलित होकर भक्ति भाव के साथ प्रभु में लीन होकर श्री आदिनाथ भगवान की आराधना कर धर्म लाभ अर्जित किया। कार्यक्रम समापन पर कार्यक्रम संयोजक वीरेंद्र काला जितेंद्र शाह एवं प्रदीप छाबड़ा मुंडोता वालों ने सभी का आभार व्यक्त किया।

दशलक्षण महापर्व में उत्साह, उमंग और भक्ति में झूमे श्रद्धालु

श्रद्धालुओं ने कि उत्तम आर्जव धर्म की पूजा

टोंक. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन नसिया अमीरगंज टोंक में दशलक्षण महापर्व के तृतीय दिन शुक्रवार को प्रातः काल ₹उत्तम आर्जव धर्म₹ की विशेष पूजा अर्चना की गई इससे पूर्व प्रातःकालीन बेला में अभिषेक एवं शांतिधारा की क्रिया की गई तत्पश्चात नित्य नियम पूजा के बाद दशलक्षण महामंडल विधान की पूजा रमेश काला, राजेश, मुकेश, अनिल, रिंकू, विकास, नेमीचंद आदि इंद्रो ने विधान की पूजा अर्चना करके अर्घ्य समर्पित किए इस मौके पर बालाचार्य निपूर्ण नंदी जी महाराज ने उत्तम आर्जव धर्म के बारे में बताते हुए कहा स्वभाव की कोमलता है ही आर्जव धर्म है मन वचन एवं काय की कुटिलता को छोड़कर अपने आत्मतत्व में एकाग्र हो जाओ क्योंकि यह माया तिर्यंच गति की प्राप्ति कराती है माया की छाया जिसकी काया में पड़ जाए उसका जीवन सफाया कर देती है हमें मायाचारी छोड़कर अपने जीवन को धर्म में व्यतीत करना चाहिए किसी के लिए किया गया हमारा छल कपट एक दिन हमें ऐसी जगह फंसा देगा कि हम सोच भी नहीं सकते इसलिए सभी प्राणियों के प्रति स्वभाव के अंदर निर्मलता धारण करें और साधमी से वात्सल्य बनाए रखें। सायकालीन बेला में आरती, प्रशन मंच के बाद सोमवार शाम को आचार्य महराज के जीवन पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

विज्ञातीर्थ क्षेत्र पर हो रहा है दशलक्षण मंडल विधान

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया

परम पूज्य भारत गौरव गणिनी आर्यिका गुरुमां 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुंसी राजस्थान में अद्वितीय द्वितीय चातुर्मास के अंतर्गत दसलक्षण पर्व के अवसर पर आज तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म की पूजन की गई। गुरु भक्त अरविंद ककोड शैलेंद्र संघी सपरिवार ने मंडल पर 16 अर्घ्य चढ़ाकर पुण्यार्जन किया। राजेंद्र भौंच मंगल विहार जयपुर एवं प्रेमचंद बड़जात्या देवली सपरिवार ने विधान के पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। आज का प्रथम अभिषेक भगवान शांतिनाथ जी का करने का सौभाग्य राजेश जैन गुड़गांव सपरिवार ने प्राप्त किया। साथ ही चातुर्मास संयोजक बनने का सौभाग्य श्रीमती मैना देवी छाबड़ा मुंबई सपरिवार ने प्राप्त किया। पूज्य माताजी ने प्रवचन के अंतर्गत सभी भक्तों को संबोधन देते हुए कहा कि-आर्जव धर्म सरल होने की शिक्षा देता है।मायाचारी से दूर रहकर सरल, भोले मन में ही भगवान वास करते हैं। कहते भी हैं कि भोले के भगवान। परंतु आज का मानव लोग क्या कहेंगे इस सोच से न जाने कितनी मायाचारी, छलकपट कर लेता है।

जनकपुरी में आर्जव धर्म की पूजा के बाद तत्वार्थ सूत्र के तीसरे अध्याय में समझायी जैन भूगोल

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी ज्योतिनगर जैन मंदिर में मंगलवार को दस लक्षण महापर्व महोत्सव में आर्जव धर्म की पूजा भक्ति भाव के साथ हुई ।प्रबन्ध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि प्रातः विधान मण्डल पाण्डुशीला पर शान्तिधारा करने का सोभाग्य राजेश गर्ग परिवार को व नीरज अर्चना जैन परिवार को तथा वेदी पर जिनेंद्र बाकलीवाल को मिला। इसके बाद नित्य पूजन व आर्जव धर्म विधान पूजन शिखर चन्द किरण जैन द्वारा साज बाज के साथ अर्थ समझाते हुए करायी गई ।विधान पूजन के बाद आर्जव धर्म के 108 जाप्य स्वाहा स्वाहा बोलते हुए किये गये। इधर दिन में तत्वार्थ सूत्र की क्लास में तीसरे अध्याय की जैन भूगोल में स्वाध्याय प्रेमियों का उत्साह देखा गया ।शाम को आरती के पश्चात छाया ठोलिया के निर्देशन में महिला मण्डल द्वारा जैन अन्ताक्षरी का आयोजन किया गया ।जिसमे बच्चों व बड़ो सभी की भारी सहभागिता रही।

दस लक्षण पर्व के तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म की पूजा हुई

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर। दिगंबर जैन समाज के दस लक्षण पर्व के तीसरे दिन उतम आर्जव धर्म की पूजा की गई। दिगंबर जैन समाज के मीडिया प्रवक्ता अमित गोधा ने बताया कि सरावगी मोहल्ला जैन मंदिर में मूल लायक भगवान के रजत कलशों से अभिषेक करने का सौभाग्य अभिषेक सोनिया चहक वश गोधा मुंबई परिवार को प्राप्त हुआ। श्रीजी के रजत कलशों से शांति धारा करने का सौभाग्य लाड़ कवर मनोज ऋतु देवांग परिधि बड़जात्या जिनेन्द्र राजेश धीरज विकास बाकलीवाल परिवार को प्राप्त हुआ।दिन में सरावगी जैन मंदिर जी मे पंडित अभिषेक जी शास्त्री द्वारा तत्वार्थ सूत्र पर पाठ कराया गया है। अभिषेक जी शास्त्री द्वारा बताया गया कि क्षमा और मार्दव के समान ही आर्जव भी आत्मा का स्वभाव है। आर्जवस्वभावी आत्मा के आश्रय से आत्मा में छल-कपट मायाचार के अभावरूप शांति-स्वरूप जो पर्याय प्रकट होती है, उसे भी आर्जव कहते हैं। यद्यपि आत्मा आर्जवस्वभावी है, तथापि अनादि से ही आत्मा में आर्जव के अभावरूप मायाकषायरूप पर्याय ही प्रकट से विद्यमान हैं। अहंकार और कपट रूपी कीड़े परिवार रूपी वृक्ष को नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। अहंकार की आरी और कपट की कुल्हाड़ी परिवार को काट डालती है।

श्री दिगम्बर जैन विद्या महिला मण्डल द्वारा भव्य नाटिका मोक्ष का प्रेमी का मंचन

रात्रि में श्री दिगंबर जैन पंचायत नसियाँ मे श्री दिगम्बर जैन विद्या महिला मण्डल द्वारा एक भव्य नाटिका मोक्ष का प्रेमी का मंचन सांस्कृतिक धार्मिक प्रोग्राम का आयोजन किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीजी का दीप प्रज्वलन करके किया गया। इस कार्यक्रम में दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष अशोक काला मंत्री दिनेश अजमेरा विजय कुमार फागीवाला विकल कासलीवाल शशिकांत गदिया अतुल पाटनी अमित गोधा राजकुमार पहाड़िया श्रीपाल अजमेरा महेन्द्र सोनी प्रकाश गदीया संदीप पाटनी संतोष कासलीवाल नवीन बाकलीवाल हरीश जैन संजय जैन विद्या महिला मंडल की अध्यक्ष निर्मला गदीया, मंत्री बिंदु काला, कोषाध्यक्ष बीना कासलीवाल, उपाध्यक्ष सीमादगड़ा, जयमाला बाकलीवाल गुणमाला बड़जात्या पुष्पा बाकलीवाल, मंजू गोधा, सरिता गंगवाल सुनीता रावका रेणुका कासलीवाल, सुधा फागीवाल मनोरमा काला बबली अजमेरा सहित समस्त सदस्यगण उपस्थित थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं प्रायोजक लादू लाल राजीव काटीवाल धर्मी चंद संदीप काला परिवार का विद्या महिला मंडल द्वारा माला पहनाकर तिलक लगाकर बहुमान किया।

वो पाप मत करना जिसे कभी माँ बाप से छुपाना पड़े : निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

सागर

भाग्योदय तीर्थ परिसर में पूज्य निर्यापक श्रमण सुधा सागर महाराज ने अपने मंगल प्रवचन देते हुए कहा की सबसे बडा छलकपट होता है व्यक्ति दूसरी की छिपी हुई वस्तु को जानने का प्रयास करता है, ये पहली मायाचारी है। जब जब तुम्हें कोई दूसरे के संबंध में अवगुण जानने की बात आवे, नियम से आपके अंदर मायाचारी जागेगी क्योंकि वह अपने दुगुर्णों को छुपाए बैठा है। हर व्यक्ति का नेचर है कि वह अपने अवगुणों को, अपनी कमियों को छिपाता है। आज बहुत विरले लोग है जो अपनी कमी को कभी उजागर कर देते हैं, इतना सरल दुनिया में कौन है? वह है जिस व्यक्ति के अंदर आर्जव धर्म प्रवेश कर जाएगा। किसी ने कहा आर्जव धर्म कैसा होता है? उसने कहा आर्जव धर्म मुनि महाराज जैसा होता है। प्रकृति ने बालक बनाकर भेजा था, वह जवान होने पर भी बालकवत रहते है इसी का नाम है-वीतराग मुद्रा। दो कारण से व्यक्ति कपड़े पहनता है- एक तो स्वयं में विकार भाव की अनुभूति होती है तब व्यक्ति वस्त्र पहना है यह दूसरे को तुम्हें देखकर विकार भाव आता है तब कपड़े पहनना पड़ते है लोकलाज के कारण। साधु को कभी अपनी उम्र की अनुभूति नहीं होती, साधु कभी जवान नही रहता और जो जवान होता है वह कभी साधु रह नहीं सकता। साधु कभी बूढ़ा नहीं होता, जिस दिन बूढ़े की अनुभूति हो जाए, साधुता पलेगी ही नही। जिसकी आँख में बालक की तरह मात्र माँ को खोजने की शक्ति आ जाती है वही आर्जव धर्म को समझ लेता है। साधु को कहा खबर आती है कि यहां महिलाएं हैं या पुरुष, सभी साधर्मी है, भेद ही खत्म हो जाता है। दिगंबर मुद्रा आर्जव धर्म का जीता जागता उदाहरण है, कोई छुपाव नही, सबकुछ खुली किताब रखों। खड़े होकर आहार लेना आर्जव धर्म का, सहजता, सरलता, निर्विकारता का प्रतीक है। तुम अपने से छोटे में कौन सी बुराई नहीं चाहते हो कि मेरी बेटे में यह बुराई नहीं होना चाहिए, भारत के नागरिक में, आपकी जैन जाति में, आपके परिवार में, आपकी बेटे में कौन सी बुराई नहीं होना चाहिए? वह तुम्हें नोट करना है और वह बुराई तुम्हारे में है, उसे तुम छुपाना चाहोगे या प्रकट करना चाहोगे? गर उसको तुम उजागर करना चाहोगे, बस तुम्हारी जिंदगी में आर्जव धर्म स्वीकार हो गया। वह अपने अवगुणों को उघाड़ता है, दुनिया के सामने मैं बुरा आदमी हूँ, मैं गंदा आदमी हूँ, लोग बुरा कहेंगे, पापी कहेंगे तो कहने दो। लोग मुझसे घृणा करेंगे, करना चाहिए, मैं घृणा का पात्र हूँ। तुम बुरे हो तो बुरा सुनने की आदत डालों। संसार के राग-द्वेष की कषायें कभी मंदिर की जाजम पर मत निपटाना, धार्मिक कार्यों में, धार्मिक महोत्सवों में मत निपटाना, यह जघन्यतम अपराध कहलाता है।

'कपट न कीजे कोय, चोरन के पुर ना बसे,' : प्राचार्य सतीश

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का भी हुआ आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। नेमीसागर कालोनी स्थित जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व के तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म की पूजन की गई। इस अवसर पर प्राचार्य सतीश जैन ने आर्जव धर्म पर प्रकाश डालते उत्तम आर्जाव धर्म को सरल धर्म बताया। अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि आज के पूजन स्थापना एवं आरती के पुनार्जक श्रीमती बुलबुल देवी एवं गंगवाल परिवार रहा। सांयकाल फैंसी ड्रेस एवं धार्मिक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के दीप प्रज्वलन कर्ता व पुनार्जक श्रीमती मंजू सेठी एवं परिवार थे। फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में 5 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में प्रथम विहान पाटनी द्वितीय आर्जव गोधा एवं तृतीय आरव गंगवाल रहे। 5 वर्ष से कम आयु वर्ग में प्रथम रिध्वी जैन द्वितीय प्रज्ञा बैराठी एवं तृतीय काशवी सेठी रहे। इस कार्यक्रम में सभी भाग लेने वाले बच्चों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर ऋषभ बड़जात्या द्वारा मिमिक्री का भी प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम की संयोजक दीपिका गंगवाल और नमिता ठोलिया रही।

तीये की बैठक

अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि

श्रीमती रंजना बडजात्या (धर्मपत्नी स्व. श्री रमेश जी बडजात्या)

का स्वर्गवास दिनांक 10 सितम्बर को हो गया। तीये की बैठक दिनांक 12 सितम्बर 2024 को हरिशचन्द्र तोतूका भवन, भट्टारक जी की नसिंया जयपुर में प्रात: 11 बजे होगी। तत्पश्चात घडियो का दस्तुर होगा।

शोकाकुल:

हेमन्त-श्वेता (पुत्र-पुत्रवधू), शिखा-सुनील बाकलीवाल (पुत्री-दामाद), यश, हिमांशी (पौत्र-पौत्री), भावेश, तिलक (दोहिते), प्रेमचन्द, ताराचन्द, हरकचन्द-आशा, सुभाषचन्द-मंजू, दीपचन्द-पुष्पा, राजकुमार-सुनयना (जेठ-देवर-देवरानी) एवं समस्त बडजात्या परिवार लता काला (ननद), अंबरीश सेठी (ननदोई) पीहरपक्ष: रमेश, नरेश पाटोदी। 9828015688